एम. एच. आई. - 01

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम. ए. पाठ्यक्रम

(इतिहास)

एम एच आई - 01 - विश्व इतिहास
(मध्यकालीन समाज एवं क्रांति का युग) - 5

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम.ए. पाठ्यक्रम
(इतिहास)

खण्ड-5

इकाई संख्या	पृष्ठ संख्या
इकाई 18	
रूस की अर्थव्यवस्था-एक पृथक संसार	5–16
इकाई 19	
अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम	17–31
इकाई 20	
अमेरिकी क्रांति का महत्व	32–38
इकाई 21	
अमेरिकी संविधान का निर्माण	39–48

पाठ्यक्रम विकास समिति

प्रो. बी.एस. शर्मा, कुलपति (अध्यक्ष)

प्रो. रविन्द्र कुमार
निदेशक, नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं
पुस्तकालय, नई दिल्ली

प्रो. एस.पी. गुप्ता
इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम
विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.)

प्रो. के.एस. गुप्ता
इतिहास विभाग, मोहन लाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

डा. कमलेश शर्मा
इतिहास विभाग, कोटा खुला
विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. बी.आर. ग्रोवर
पूर्व निदेशक, भारतीय इतिहास
अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

प्रो. जे.पी. मिश्रा
पूर्व इतिहास विभागाध्यक्ष, काशी हिन्दू
विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

डा. बृजकिशोर शर्मा
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग कोटा
खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

डा. याकूब अली खान
इतिहास विभाग कोटा खुला
विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम निर्माण दल

प्रो. मन्सूर हैदर
इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम
विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.)

डा. आर.के. पन्त
एसोसियेट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

श्री एच.सी. जेन
इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, कोटा (राज.)

डा. सम्पत जैन
प्राचार्य, एस.एस. जैन
सुबोध-महाविद्यालय जयपुर (राज.)

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो.(डॉ.) नरेश दाधीच
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो.(डॉ.)बी.के. शर्मा
निदेशक(**अकादमिक**)
संकाय विभाग

योगेन्द्र गोयल
प्रभारी अधिकारी
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी,
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पुनः उत्पादन - Oct 2012 MAHI-01/ISBN No.-13/978-81-8496-260-4

इस सामग्री के किसी भी अंश को व. म. खु. वि., कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप मे 'मिमियोग्राफी' (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

व. म. खु. वि., कोटा के लिये कुलसचिव व. म. खु. वि., कोटा (राज.) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

इकाई-18

रूस की अर्थव्यवस्था-एक पृथक संसार

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.2 सामन्तवादी रूस की अर्थ व्यवस्था

(क) ऐतिहासिक संदर्भ

(ख) उद्योग नगर तथा व्यापार

(ग) कृषिदासता का अन्त

18.3 रूसी अर्थव्यवस्था औद्योगिक पूंजीवाद के युग में (1861-1900)

18.4 औद्योगिक क्रान्ति समापन तथा पूंजीवादी उद्योग का उत्थान

18.5 रूस में साम्राज्यवाद

18.6 स्टालीयिन सुधार

18.7 क्रान्ति के युग में वित्तीय व्यवस्था

(क) राजधनी पर रेड गार्ड आक्रमण

(ख) भूमि आज्ञप्ति

18.8 वित्तीय पूंजीवारी

(क) आन्तरिक व बाह्य व्यापार में वृद्धि

(ख) इन्डस्ट्री का राष्ट्रीयकरण तथा श्रमजीवियों का नियन्त्रण

18.9 सोशलिस्ट सरकार की आर्थिक नीति

18.10 नेप अथवा नवीन वित्तीय योजना

18.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

18.0 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा उद्देश्य आपको रूस की वित्तीय व्यवस्था के संदर्भ में बहुत ही संक्षिप्त जानकारी देना है। रूस अद्भुत रूप से अपने में एक अलग संसार था जिसके नये-नये तजरबों ने विश्व में अनोखे आदर्शो तथा नवीनतम धारणाओं पर आधारित प्रशासन तथा वित्तीय व्यवस्था शुरू की।

इस इकाई के अध्ययन से आपको निम्नलिखित बातों का ज्ञान हो जाएगा-

रूस में विभिन्न सामन्तवादी अवस्थान तथा उन की आर्थिक स्थिति का ऐतिहासिक संदर्शन

औद्योगिक पूंजीवादी तथा साम्राज्यवादी रूस में वित्तीय व्यवस्था

16 वी शताब्दी के अन्त में बीसबी शताब्दी के प्रारम्भ तक हुए सुधार तथा बदलाव। समाजवादी रूस में 1917 की क्रान्ति के पश्चात वित्तीय सृष्टि का मूल्यांकन

18.1 प्रस्तावना

अन्य देशों कें समान रूस में भी विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक विरचन (आदिमवाद, सामुदायिक, समान्तवाद तथा साम्राज्यवाद) की अनुवृत्ति हुई। परन्तु रूस में कुछ अद्भुत भी घटा जब साम्राज्यवादी स्थिति श्रमजीवियों के नियंत्रण में परिवर्तित होकर समाजवादी प्रथा बन गई। इस नई प्रणाली की महता इसलिये और भी उजागर हुई कि कुचला हुआ रूस शीघ्र विश्व की महान शक्ति बन गया अनुदर्शतयः सामन्तवाद को अस्त-व्यस्त कर दिया था। अन्य प्रगतिशील साम्राज्यवादी देशों की तुलना में तकनीकी तथा आर्थिक रूप से रूस के पिछड़ेपन का मुख्य कारण यही था। जार के निरंकुश शासन तथा तानाशाही व पूंजीवादी सामन्तवाद में पनपती क्रूरता ने वर्गो के पारस्परिक अन्तरविरोध को और बढ़ा दिया था। 19 वी शताब्दी के अन्त से ब्रिटिश, फ्रांसीसी, बेलजियन एवं जर्मन पूंजी रूस के मूल उद्योगों के विभिन्न क्षेत्रों पर छाने लगी। इस प्रवाह द्वारा पश्चिमी पूंजीवादीयो ने रूस को औद्योगिक बनाने में सहायता तो कम की परन्तु शोषत श्रम जीवी वर्ग को चूस डाला। युद्ध से पूर्व (1913) की तुलना में रूस 1915 से दीवालिया होने लगा। राष्ट्रीय ऋण बढ़ने लगा अन्तरिम सरकार के सभी कदम बेकार गए। दुर्भिक्ष, भुखमरी तथा "कोरनिलव" समान आर्थिक नीति मार्च जुलाई 1917 तक चलती रही तथा सितम्बर, अक्टूबर 1917 के भीतर 340 प्रतिशत खाद्य वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हुई। 1917-20 तक संपिड़न, 1921-25 तक आर्थिक बहाली तथा 1916-32 तक समाजवादी आर्थिक नीति की नीव खड़ी। इसका परिणाम था एक समृद्ध तकनीकी तथा वैज्ञानिक रूप से प्रगतिशील रूस भले ही उसकी इस अनूठी प्रणाली का अस्तित्व क्षणिक सही।

18.2 सामन्तवादी रूस की आर्थिक स्थिति-ऐतिहासिक संदर्भ

क- ऐतिहासिक संदर्भ -

कृषि तथा कृषक-साधारणत: सामन्तवादी रूस में 9 से 19 वी शताब्दी तक निम्नलिखित अवस्था बताए जाते है, आदि सामन्तवादी काल (9-12) उन्नतिशील सामन्तवाद (13-14)ए शताब्दी, उत्तर, सामन्तवादी काल (15-17 वी शताब्दी) तथा निरकुंश सामन्तवादी एवं कृषिदासता (18-वी शताब्दी) कृषिदासता का अन्त (18 वी शताब्दी के अन्त से 19 वी शताब्दी के मध्य तक) तथा पूंजीवादी स्थिति एवं कृषिदासता की समाप्ति (1861 में) हुई।

इन सभी स्थितियों में रूस की आर्थिक व्यवस्था का मानांकन 3 प्रकार से किया जा सकता है:-

1- जमीनदारी के आकार तथा उसकी प्रकृति के आधार पर।
2- फर्मिक तथा फार्म के परिपालन के आधार पर।
3- कृषिदासता जो शोषण का साधन थी तथा कृषि के श्रम द्वारा कार्यान्वित होने के आधार पर

भूमि का सामन्तवादी समाज में महत्व रहा था क्योंकि इसी के द्वारा कृषकों की आर्थिक रूप से पराश्रित स्थिति में रखा जा सकता था। 19 वी शताब्दी से प्रारम्भ यह स्थिति बड़ी जल्दी फैलने लगी सम्राटों, चर्च के पादरीगणों तथा अन्य समृद्ध लोगों को भूमि के आर्थिक

महत्व ने स्मर्द (सामुदायिक भूमि) पर हाथ डालने पर मजबूर किया क्योंकि सभी उपजाऊ भूमि वे ले चुके थे। रूस में जितनी समुदायिक भूमि थी उन्हें "बोयर ने (सबसे समृद्ध तथा शक्तिशाली) लोगों ने हथिया लिया था। भूमि सम्बन्धी ओतचीना अधिकारों (जो 12 से 15 शताब्दी तक प्रचलित रहे) के अंतर्गत जमीन के मालिक उसे बेच सकते थे अथवा किसी की भी दे सकते थे। अथवा 1565 में, इवान ने ओतचीना के स्थान पर आपरीचीना अधिकारों का प्रारम्भ किया जिसके द्वारा बोयरों के विरूद्ध कार्यवाही समाप्त कर दी। अब किसी भी जमीन को हथिया कर दरबारी अथवा शाही लोग ले सकते थे तथा केन्द्रीय शासन सुदृढ़ रह सकता था। एक आपरीचिन सैनिक संगठन भी इसी उद्देश्य से बनाया गया। 1572-84 तक एक विभाग अलग से खोला गया कि नई बढ़ती हुई जमीनों का ब्यौरा रख सके। 18 वीं शताब्दी से औतचीना प्रणाली फिर से शुरू हो गई। 19 वी शताब्दी तक कृषकों से उनकी भूमि तेजी से छीनी जाने लगी। 1850 में कृषकों के पास जमीनदारों की जमीन का केवल 1/3 भाग रह गया।

रूस में कृषि प्रधान सुधार कम ही थे। वैसे तो सामन्तवादी युग में दो प्रकार की खेती थी बंजर या परती (जिस में कोई वस्तु कई वर्षों तक बोकर जमीन को कई वर्षों के लिए खाली छोड़ देते (दूसरी दो खेत प्रणाली जिसमें आधी भूमि एक सोचे समझे ढंग से प्रयोग में लाकर आधी छोड़ी जाती) कुछ दिनों बाद इसे त्रिकृषि (Three field system) प्रणाली पर आधारित कर दिया गया जो चलता रहा। रूस में अधिकतर राई, गेहूँ जौ, चना, फाफर इत्यादि को पैदावार होती।

कृषि प्रधान रूस में बन्धुआ मजदूर एवं ऋण तथा अनुबन्धों द्वारा जुड़े हुए निर्धन थे जो जाकुपी (बन्धुआ ऋण द्वारा) तथा रियादोविच (अनुबन्धों द्वारा बन्धुओं) कहलाते थे। इवान तृतीय ने अपने सूदेबनीक (1497) (कानूनों की पुस्तक) में कृषकों की शरत काल के 15 दिनों के अतिरिक्त (अपना काम समाप्त करके भी) खेत तथा मालिक बदलने। छोड़ने की मनाही कर दी थी। 1581 से यह 15 दिन की छूट भी समाप्त हो गई। 1592 में सभी भूमि वालों तथा कृषकों की सूची बनी तथा इस रजिस्टर द्वारा कृषकों पर उनके मालिकों को कानूनी तौर से पूर्ण अधिकार मिल गया। 1597 में सरकार ने जो मजदूरों को वापस आ जाने की चेतावनी दी तथा 1607 में दी गई 15 वर्ष की अवधि (भागे कृषकों के लिए) 1649 में स्टेट काउन्सिल के कानून से समाप्त कर दी गई। अब कृषक "बन्धुवा" हो गया तो उसने निरन्तर कीव रूस में विद्रोह किए (1024, 1068, 1031 तथा 1113)। 1606-1607 का इवान वलोत्नीकोव का विद्रोह हुआ 1667-771 का कृषिक विद्रोह स्टेपान राजिन के नेतृत्व में हुआ। जार ने इनका दमन कड़ाई तथा क्रूरता से किया। अब कानूनी तौर पर कृषिक कोई शिकायत भी नहीं कर सकता था पर जमीनदार अवश्य उसे साइबीरिया में निकाला देने का अधिकार रखता था। 1773-75 में युगाचन के नेतृत्व में एक कृषकों का विद्रोह हुआ। उनके उद्देश्य बहुत साफ तौर पर क्रांन्तिकारी भले ही न हो पर उनके असन्तुष्ट होने के द्योतक अवश्य थे।

ख- उद्योग, नगर, व्यापार-

उद्योग-धन्धे (मुख्यत: रेशमी, ऊनी, कपड़े लकड़ी के काम, जहाज बनाना वर्तन। मिट्टी तथा चीनी के, धातु लोहे, चांदी सोने तांबे की वस्तुये) 16 वीं 17 वीं शताब्दी में बहुत प्रगति पर थे यद्यपि उन्हें मंगोल काल (1236-1480) में कुछ झटका लगा था। 1700 में 30 फैक्ट्रियां थी जो 1725 में 191 तथा 1769 में 655 हो गई। 1770 से 1861 के सुधारों तक संख्या 15388 हो गई।

धीरे-धीरे नगर बढ़ने लगे 9वी 10वी शताब्दी के 24 नगर 11वीं में 64, 12वी शताब्दी में 135 हो गए जिन में कीव, नवगोरद् रोस्तव, स्मालेन्स्क,- पलोत्सकव मुख्य थे। तातार मंगोल आक्रमण' से कुछ धक्का लगा पर 13वी शताब्दी में 300 नगर थे 15-17 शताब्दी में मास्को (1147 में बसा) राजनैतिक, धार्मिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक केन्द्र हो गया। 18वी शताब्दी में पीटर प्रथम ने फिनलैन्ड की खाड़ी पर स्वीडन से छीन कर नवीन नगर सेन्ट पीटर्ज वर्ग बनाया। 18वीं तथा 19वी शताब्दी में कई नए नगर बसे।

कीव तथा नवगोरद में व्यापार बढ़ा जहां देशी तथा विदेशी सभी माल मिलता था। रूस के एकीकरण (1653) से आन्तरिक रूकावटें तथा कस्टम समाप्त हो गया। 17वी शताब्दी से व्यापार इतना बढ़ा कि 18वीं शताब्दी के मध्य का 18 मिलियन रूबल हो गया। 1860 में विदेशी व्यापार 2103 मिलियन से 19वी में 1269 मि. रूबल तथा 1856-60 में 4,315 मि. रूबल हो गया। व्यापार की यह उन्नति इस तथ्य की पुष्टि करती है कि बेगार समाप्त हो रहा था टेकनालोजी बेहतर हो रहा थी।

ग- सर्फडम (कृषिदासता) का अन्त:

रूस की आर्थिक उन्नति में पूंजीवाद निहित था। अब सामन्तवादी कृषिदासता नहीं चल सकती थी। 1853-56 के क्रीमियन युद्ध ने रूस की पिछड़ी स्थिति से उसे अवगत करा दिया। जार एजेक्सेंडर II ने बन्धुवा कृषिदासों को छुटकारा देने के लिए सुधार किए। अब जमीनदार कृषिकों को बेच खरीद नहीं सकता था। कृषक अब स्वाधीन थे। उस्तावनीय ग्रामती (title deeds) द्वारा सब कानूनी तौर पर सम्पन्न हुआ धीरे-धीरे नाना प्रकार के कृषि प्रधान सुधारों से रूस में दूसरे विभागों में भी सुधार हुए। 1861 के सुधारों में सीमित आकांक्षाओं की पूर्ति शोषण तथा क्रूरता अवश्य छाई दिखाई देती है फिर भी इससे कुछ प्रगतिशीलता का आभास भी होता है। औद्योगिक पूंजीवाद तथा अर्थव्यवस्था की उन्नति हुई जेम्स्तवा (गांवों की लोकल सरकारों) के सुधार के बाद 1864 में न्याय प्रणाली में 187० में नागरिक लोकल सरकार में तथा 1874 में सेना सम्बन्धी सुधार हुए।

रूस की इस तीव्र उन्नति से औद्योगिक प्रगति हुई तथा एक श्रमजीवी वर्ग उभरा जिसने पूंजीवाद को समाप्त करके एक स्वाधीन जीवन की ओर अग्रसर होने में सहायता की।

18.3 रूसी अर्थव्यवस्था औद्योगिक पूंजीवाद के युग में (1861-1900)

18 वीं शताब्दी में सामन्तवाद तथा कृषिदासता समाप्त होने के पश्चात 19 वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध से प्रगतिशील उत्पादन शक्तियों तथा पिछड़े हुए उत्पादन के सम्बन्धों के मध्य एक युद्ध सा छिड़ गया। यद्यपि अभी पुराने तत्व विद्यमान थे, 1861 के सुधारों ने रूस को

उन्नति को पूंजीवादी धाराओं पर ला डाला। अब अक्रियता का अंत होने लगा। भ्रान्तिपूर्ण नारोदनिकों का विचार था कि रूस में न कभी पूंजीवाद था (न होगा), न कोई श्रमजीवी वर्ग उठेगा न उभरेगा अतएव केवल कृषक ही क्रान्ति ला सकेंगे या यह कि रूस की उन्नति का आधार उस के कुटीर उद्योग धन्धों पर आधारित था। यह कभी उन्होंने नहीं सोचा कि रूस में सभी तत्व ऐसे विद्यमान थे जो पूंजीवादी उत्पादन में सहायक हो सकते थे। यह सत्य है कि औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि में (19 वीं शताब्दी के उत्तर्राद्ध से) रूस ने ब्रिटेन, फ्रांस को पीछे छोड़ दिया था। 18 वीं शताब्दी में रूस में पूंजी का संचयन (भूमि द्वारा) का अभाव भी न था। ज्वाइन्ट स्टॉक कम्पनियाँ (1861 में 272 मि० रूबल 1873 में 373-117 मि० रूबल, तथा 1874-81 में 272 कम्पनियां 805, 6 मि० रूबल) थी। इस प्रकार से पूंजीवाद की एकाग्रता से 2 मुख्य वर्ग श्रमजीवी मजदूर तथा औद्योगिक बूर्ज्वा उभर आये। 19 वीं शताब्दी के अंत तक 10 मिलियन मजदूर थे जो केवल संख्या में नहीं बढ़े थे अपितु, वह अपनी शक्ति को भी समझ चुके थे। लेनिन ने समय को सामाजिक रूप से 3 भागों में बाटा था।

1. अमीर वर्ग जिन की सत्ता 1825 से 1861 तक थी
2. राजनोचिन्त सी अन्य शिक्षित 1861 से 1895 तक जो क्रान्ति की आत्मा थे।
3. प्रालीतैरियत युग जो 1895 से प्रारंभ हुआ।

लेनिन के विचार में रूसी कृषि में पूंजीवाद की प्रगति उसे समकालीन प्रचलित 2 रूप (प्रशा या अमेरिका का) दे सकती थी। दोनों ही स्थितियों में सर्फडम (कृषिदासता) के साथ कैपिटलिज्म अनिवार्य था। रूस में कृषक अभी भी भूमिवानों पर निर्भर था। इन्डस्ट्री के समान भूमि भी गिने, चुने समूह के पास एकत्रित हो गई। फार्मिश मशीनें तथा पशु भी कुलक (जमीदारों) के ही साथ में थे। इस प्रकार कृषक वर्ग भी टूट कर बिखरने लगा। धीरे-धीरे इस समाज का पुराना अस्तित्व एक नया आकार लेकर उभरा। अब दो वर्ग थे समृद्ध कुलक तथा निर्धन कृषक मजदूर। 1861 से 1900 तक बहुत कृषक नगरों में बस गये जहां आय काम द्वारा बढ़ सकती थी। फिर भी नवीन मशीनों द्वारा कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी रही। कारण था खेतिहर भूमि तथा करों में वृद्धि। इस प्रकार कृषक भले ही बराबर हुआ हो जमीनदार कुलक की अमीरी बढ़ती गई।

18.4 औद्योगिक क्रान्ति समापन तथा पूंजीवादी उद्योग (कैपिटलिस्ट इंडस्ट्री) का उत्थान

19 वीं शताब्दी के अंत से इन्डस्ट्री में विभिन्न प्रकार की उत्पादन प्रणाली प्रचलित थी जिसमें कुटीर उद्योग से लेकर बड़े पैमाने के इन्डस्ट्रीयल उत्पादन विद्यमान थे। इन्जीनियरिंग इन्डस्ट्री के द्वारा मशीनों से मशीनों की उत्पत्ति इत्यादि। प्राईवेट इन्टरप्राईजेज तथा पूंजीवादी उत्पादन ने एक ओर कुटीर धन्धे समाप्त किये तो दूसरी ओर उत्पादन की एकाग्रता तथा बढ़ोतरी ने बडे-2 पूंजीवादियों, बैंकिग तथा ट्रांसपोर्ट कम्पनियों को मनोपोली ऐसोसियेशन बनानें तथा उत्पादन कन्ट्रोल करने की ओर आकर्षित किया जो बढ़ता गया। उत्पादन के सभी क्षेत्रों में

विदेशी पूंजी और विदेशी ज्वाइन्ट स्टाक (बेलजियन, फ्रेन्च, जर्मन, ब्रिटिश, तथा अमरीका) पूंजी छाने लगी। यद्यपि इस से आर्थिक गतिविधियों देश में बढ़ी।

19 वीं शताब्दी के अंत से रूस के आयात में परिवर्तन हुआ। इन्डस्ट्री की उन्नति से मशीनों का निर्यात बढ़ा। पहले की महत्वपूर्ण कपास अब दूसरे नम्बर पर और धातु तीसरे स्थान पर पहुंच गया। रूस के सेन्टपीर्टजबर्ग की औद्योगिक उद्यम कार्यों के लिए रूस ने कोयले का आयात बढ़ाया तथा चाय, ऊन, फल, शराब इत्यादि की खरीद तेज कर दी। पहले 1857 तथा 1868 के अबाध व्यापार फिर 1891 में संरक्षात्मक शुल्क (प्रोटेक्टिव टैरिफ) शुरू हुआ जिस से कस्टम 33% प्रतिशत (वस्तुओं के मूल्य पर) लगाया गया। साथ ही सिक्कों के प्रचलन तथा प्रसार सम्बन्धी सुधार, हुए जिसके अंतर्गत सोने चांदी के सिक्कों को बैंक के नोटों से बदला गया। शराब, तम्बाकू, शक्कर इत्यादि पर शुल्क लगा। परन्तु गर्वनमेंट के टैक्स का भुगतान करने वाले केवल श्रम जीवी थे। स्टेट बजट उतना ही धृणा का पात्र थे जितनी कर प्रणाली थी। सरकार ने 1895 से 1897 के मध्य एक मुद्रा सम्बन्धी सुधार किया जिसके अन्तर्गत कागज के रूबल को 66 2/3 सोने के कोपेक के बराबर कर दिया गया। 1867 में स्टेट बैंक को नोटों की आवश्यकतानुसार छापने तथा प्रचलित करने के आदेश से आर्थिक रूप से राहत मिली, अर्थव्यवस्था में प्रगति देश में पूंजीदार सम्बन्धों की वृद्धि साख की बढोतरी तथा विदेशी पूंजी का अन्तर्वाद हुआ।

18.5 रूस में साम्राज्यवाद

रूस के साम्राज्यवादी युग की प्रमुख विशेषता थी आर्थिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में इजारेदारी। लेनिन का प्रसिद्ध कथन था कि "साम्राज्यवाद की अत्यंत उचित परिभाषा यही है कि वह पूंजीवाद की सर्वोच्च अवस्था है इसकी 5 मुख्य विशेषतायें हैं। (1) पूंजी तथा उत्पादन का केन्द्रीकरण (2) बैंक पूंजी का औद्योगिक पूंजी में सम्मिश्रण तथा परिणाम स्वरूप उनका विक्त पूंजी तथा वितीय अल्पतंत्र में परिवर्तन (3) वस्तुओं के स्थान पर पूंजी के निर्यात का महत्व बढ़ जाना, (4) अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की मनोपोलिस्ट पूंजीवादी संस्थाएं जिन्होंने लाभ हेतु संसार को आपस में बांट लिया था (5) समस्त संसार का महान पूंजीवादों के बीच क्षेत्रीय वितरण। इस प्रकार सभी पांचों चिन्ह रूस में दृष्टिगोचर होते हैं अतएवं अन्य देशों के समान रूस भी 19 वी शताब्दी के अन्त तथा 20 वी शताब्दी के प्रारंभ में साम्राज्यवादी हो चुका था परन्तु रूस में अन्य देशों के मुकाबले कहीं अधिक उत्पादन का केन्द्रीयकरण था और किसी भी देश में रूस के समान बड़े-बड़े औद्योगिक इन्टरप्राईजेज में इतने अधिक मजदूर न थे। उत्पादन के केन्द्रीयकरण से शक्तिशाली मनोपोली की बढ़ोत्तरी हुई बैंको के इन्डस्ट्री पर प्रभाव के परिणामतयः वित्तीय पूंजी व (फाइनेन्स कैपिटल) तथा अल्पतंत्र बढ़ा। यद्यपि पिछड़े पन तथा आर्थिक दशा के कारण रूसी पूंजी ने भी अंतराष्ट्रीय मनोपोली संस्था तथा वितरण में भाग लिया रूस जापान युद्ध रूस की साम्राज्यवादिता का खुला परिणाम था।

रूसी समाज में पूंजीवाद की परजीविता तथा क्षीणता की भी अपनी मुख्य विशेषतायें थी। शोषण द्वारा एकत्रित धन से पनपता छोटा सा वर्ग एक बड़े समाज के लिए किसी भी प्रकार से लाभप्रद न था। स्वार्थ के लिये मूल्यों में वृद्धि, तथा मुनाफाखोरों द्वारा तेल, लोहा,

कोयला जैसी आवश्यक सामग्री की उत्पत्ति पर प्रतिबन्ध, तकनीकी प्रगति पर रोक, देश की प्राकृतिक उपज का 'शोषण और उस पर विदेशी धन का देश में प्रवाह ऐसी स्थितियां थी जो रूस जापान युद्ध की पराजय की शक्ल में उभरी परन्तु यह जनता की नहीं जार की हार थी। 1600 से 1907 तक के कई प्रदर्शनों ने क्रान्ति का वातावरण बना दिया परन्तु रूस की यह क्रान्ति अन्य देशों में हुई क्रान्ति से अपने परिणामों के कारण भिन्न थी।

क्रांति तथा विश्व युद्ध के रूस को प्रारंभ में धक्का, लगा। रूस के जर्मनी से शीत युद्ध तुर्की ईरान मध्य पूर्वी देशों के संदर्भ में चल ही रहा था। 1900-03 तथा 1908-09 की आर्थिक संकटावस्था 1910-14 के मध्य समाप्त होने लगी। परन्तु रूस के मनोपलिस्ट के धन हथियाने की प्रवृत्ति से प्रतियोगिता के अभाव तथा विदेशी धन के प्रवाह से एक ओर तो तकनीकी पतन तथा उत्पादन प्रवृत्ति का शिकार हुए तो दूसरी ओर मुट्ठी भर मनोपोलिस्ट रूस की सरकार को अपने आर्थिक लाभ का एक जरिया समझने लगे। सरकार ने सेनाओं के हितों पर अर्थव्यवस्था के नियम बनाए कुछ विशेष संस्थायें इन्डस्ट्री की विभिन्न शाखाओं की देख रेख को नियुक्त कर दी गई।

18.6 स्टालीपिन सुधार

1905-7 की क्रान्ति में कृषकों के विद्रोह प्रदर्शन तथा 1901 की 7 फसल की खराबी से 1906 में सरकार ने राहत कार्यो की ओर ध्यान दिया पर जार की सरकार फिर भी समृद्ध किसानों के हितों की रक्षा में अधिक सक्रिय थी तथा उन्हें अपनी सत्ता का आधार समझती थी। पूंजीवादी आधार पर स्टालीपिन (जो एक चरम पन्थी प्रतिक्रियात्मक व्यक्ति था तथा सरकार से भूतपूर्व अमीर तथा गवर्नर फिर मंत्री इत्यादि होने के नाते जुड़ा था) सुधार हुए तथा जार का उकाज (आर्डर) 09 नवम्बर 1906 में किया हुआ जून 14, 1910 में कानून बन गया। इसके अंतर्गत जमींदार अधिकतर भूमि खरीदकर अपने फार्म बनाने तथा निर्धन कृषक भूमि बेच कर नगर में नौकरी की खोज को उतावले हो उठे। कृषकों की भूमि बैंकों के (जो 1880 में बना था) कानून नई दशानुसार ढाले गये जिसने 1906-15 तक 465 मिलियन रूबल की जायदाद के ठिकाने लगाने में सहायता दी। कृषकों को कहीं भी बस जाने की अनुमति तथा यूरोपी भागों से निकलकर मध्य ऐशियाई भागों में बसाने की प्रथा प्रारम्भ हुई।

स्टालिपिन सुधारों ने रूस को बूर्ज्वा राजतंत्र में ढाल दिया। कृषि दासता की प्रथा की बुराईयों को समाप्त कर के भी इस सुधार ने समृद्ध तथा निर्धन कृषकों के मध्य के फास्ले को और भी बढ़ा दिया।

18.7 क्रांति के युग में वित्तीय व्यवस्था

क- राजधानी पर रेड गार्ड आक्रमण:-

लेनिन ने क्रान्ति के पश्चात के प्रथम 4 महीनों (25 अक्टूबर से फरवरी 1918 तक) को "राजधानी पर रेडगार्ड के आक्रमण" का युग कहा है जो आवश्यक क्या अनिवार्य हो गया था शोषण से श्रम जीवियों को मुक्त कराने के लिए बूर्ज्वा क्रान्ति के विपरीत समाजवादी क्रान्ति सत्ता को सम्पूर्ण उद्देश्य नहीं समझती बल्कि अपनी मन्जिल की ओर प्रथम चरण मानती है। राष्ट्रीयकरण सहसा नहीं हो सकता। आर्थिक स्थिति का पूर्ण रूप से बदलाव नई धाराओं तथा धारणाओं के आधार पर और भी पैचीदा काम है। अक्टूबर क्रान्ति के फौरन बाद लेनिन ने एक

पाण्डुलेख श्रमजीवियों के नियंत्रण के पाण्डुलिपित अधिनियम लिखा जिसमें उद्योग, खेतीबाड़ी, बैकिंग तथा अन्य मुद्दों का कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी श्रमजीवियों की बताई। यद्यपि मेनशविक इस के विरूद्ध थे। परन्तु 14 नवम्बर 1917 में आल रशा सेन्ट्रल एक्जेकेटिव कमीटी ने इस कन्ट्गोल को मान्यता देकर श्रमजीवी नियंत्रण आज्ञप्ति, द्वारा सारे उद्योग, इण्डस्ट्री पर काबू पाया। नए सामाजिक रिश्ते बनाए गए उत्पादन बल्कि उसके संगठन का भी उत्तरदायित्व ले बैठा। इस आज्ञप्ति को ट्रेड यूनियनों तथा फैक्ट्री कमीटियों ने बाध्य किया। एक नए समाज की नींव पड़ी। प्रथम आल रशा कांग्रेस आफ ट्रेड यूनियन (पेट्रोगाड, जनवरी 1918) ने सोवियत सरकार को बिना अनुबन्धों के अनुलम्ब देने का प्रण किया। फैक्ट्री कमीटियों को ट्रेडयूनियनों में मिला दिया गया जिससे श्रम जीवियों पर उन के अधिकार भी बढ़े तथा समानान्तरवाद भी न रहे। यद्यपि अराल तथा कुछ दूसरे मध्यस्थ प्रान्तों में विरोधी तत्व तथा विदेशी पूंजीवादी (जिनकी रूस से फैक्ट्रीया थी) जैसे अमरीकन तथा स्वीडिश कन्सल्ज ने मास्को क्रांतिकारी सैनिक संस्था से प्रतिरोध किया परन्तु 1918 तक वर्करों का कन्ट्रोल सम्पूर्ण रूस में हो गया। अक्टूबर 26, 1917 में लेनिन ने एक राज्य सभा की स्थापना का (जो अर्थव्यवस्था का संगठन कर सके) विचार दिया।

1918 में बेलोरूस, लैटविया, स्टोनिया की उद्यम संस्थानों का राष्ट्रीयकरण हो गया। मार्च 1918 में तुर्किस्तान की काटन, खनन उद्योग तथा कोयले ईधन का राष्ट्रीयकरण हुआ। सभी कुछ नया था पर कुछ भी प्रारंभ में सुसंगठित न था लेनिन ने कहा।

यह बदलाव का समय (पुरानी पद्धति से नई की ओर) एक नवीन उपज थी तथा विकास के युग में राष्ट्रीयकरण के आवेग में बैंकिग को भी धक्का लगा जनवरी 1917 में विदेशी पूंजीवादी 47 प्रतिशत पूंजी (रूस के 8 बैंकों में) के मालिक थे। पार्टी की पैरिस कम्यून द्वारा की गई बूजर्वा हाथों में बैंक छोड देने की भूल याद थी। उन्होंने शीघ्र ही बाल्शविक पार्टी के मेम्बरों को बैंकों के विभिन्न विभागों की सत्ता सोंप दी। 14 दिसम्बर को रेडगार्डो का यूनिट पेट्रोग्राड तथा स्मोलनी से बैंक कन्ट्रोल करने चला। कुछ ही घण्टों में सभी चाबियां सोवियत कमीसार के हाथ में थीं। उसी शाम आल रशा सेन्ट्रल एक्जेकेटिव कमिटी ने बैंकिग को स्टेट मनोपोली करार दिया। इस बैंकिग के राष्ट्रीयकरण के रूस पर विदेशी आर्थिक सत्ता की समाप्ति होने लगी तथा इन्डस्ट्री के राष्ट्रीयकरण में भी इससे सहायता मिली। जितने पुराने ऋण थे। उनकी रद्द करने की आज्ञप्ति 21 जनवरी 1918 को पास हुई। अब रूस के श्रमजीवी पैरिस, लन्दन, बर्लिन, न्यूयार्क तथा अन्य पूंजीवादी केंद्रों के बैंकरों को शुल्क देने पर विवश न थे। सभी शिकायत इस संदर्भ में रूस द्वारा रद्द कर दी गई। अप्रैल 22, 1918 को काउन्सिल आफ पीप्ल्ज कमीसार ने विदेशी व्यापार को स्टेट की मनोपोली करार दिया। तथा एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट केवल स्टेट द्वारा ही सम्भव हो गया। सितम्बर 1918 तथा समुद्री तथा अन्य सभी आवागमन के साधनों (रेलवे, जल द्वारा) पर स्टेट कन्ट्रोल हो गया। शीघ्र ही सोवियत गर्वनमेंट ने कपड़ा तथा खेती बाड़ी मशीनरी इत्यादि के उत्पादन पर अपना अधिकार जमा लिया। शहरी उपभोक्ता तक खाद्य सामग्री का वितरण भी अब स्टेट द्वारा होने लगा। लेनिन के अनुसार शताब्दियों के शोषण तथा दूसरों के लिए काम में जुटे रहने के पश्चात श्रमजीवी अब स्वयं अपने लिये काम करने का अवसर पा गए तथा आधुनिक टेकनालोजी सहित राष्ट्र निर्माण में लग गए। 29 अक्टूबर श्रमजीवियां के हित में 8 घण्टे प्रतिदिन

तथा 48 घण्टे प्रत्येक सप्ताह कार्य के लिए निर्धारित किए गए। 11 दिसम्बर 1917 से अस्वस्थ के लिए लाभ की शुरूआत हुई जिससे दवा इलाज मुफ्त होने लगा। औरतों को मुफ्त इलाज के अतिरिक्त प्रसूति के लिए छुट्टी भी दी जाने लगी। समृद्ध लोगों के बड़े-बड़े घरों को स्टेट ने विश्राम गृह, सैनिटोरियम, बाल जगत क्लब तथा पुस्तकालय इत्यादि के लिए जब्त कर लिया। जो लोग काम नहीं करते थे उनका राशन कार्ड भी नहीं बनता। अब तो सोवियत कानून था "जो काम नहीं करेगा वह रोटी भी नहीं खाएगा।"

ख- भूमि आज्ञप्ति

नगरों से क्रान्ति गांव में फैली। कृषकों ने द्वितीय आल रशा कांग्रेस आफ सोवियत्स" के फैसलों को गृहण करने की उत्सुकता दिखाई जिसके द्वारा वे अपना शोषण तथा कृषिदासता समाप्त करना चाहते थे। यद्यपि यह कार्य अलग-अलग भूमि संस्था तथा कृषकों के उपपतियों को सोंपा गया पर बड़े-बड़े भूमिदार इस में रोड़े अटकाते रहे। लेनिन स्वयं कृषकों के मध्य बैठ उन्हें उनकी निहितशक्ति से अवगत कराता। सभी निर्धन भूमिहीन तथा समृद्ध कृषक जमीनदारों के विरूद्ध एक हो गए क्योंकि दोनों ही इस में अपना लाभ देख रहे थे एक को जमीन दूसरे को श्रम शक्ति चाहिए थी। इस प्रकार 13 दिसम्बर 1917 को एक नया अधिनियम बनाया गया भूमि संस्थाओं तथा भूमि कमीटियों व खेती सम्बन्धी कानूनों की नई सुबह उजागर हुई। धीर-धीरे बोलस्त ने सभी भूमि सम्पत्ति जब्त कर लीं फरवरी 1918 तक 75% प्रतिशत भूमि जब्त हो चुकी थी।

गावों में 3 ग्रुप (कुलक जमीनदार, मध्यवर्गीय कृषक वर्ग तथा निर्धन श्रमिक) वर्ग हुए अपने उद्देश्य (पूंजीवादी साम्राज्यवादी बूर्ज्वा तथा श्रमजीवी) सहित एक असमंजस में पड़ गए। सोवियत बाल्शविक पार्टी ने देहाती निर्धन को ही सहारा दिया। लेनिन ने भाषण जनवरी 1918 में कहा "यह कोई पुस्तक द्वारा दी गई सहायता नही बल्कि तजरबों तथा क्रान्ति में भाग लेकर समझे बुझे ढंग से अपनाई पालिसी है। हमने जमीनदारों से भूमि हतियाई है तो कुलांक तथा समृद्ध कृषकों के लिए नहीं।" इस प्रकार सोवियत कृषि सम्बन्धी सुधार स्वयं अपने में एक अनोखे नीवन प्रणाली पर आधारित थे। तुर्किस्तान में 152 मिलियन एकड़ भूमि जो जमीनदारों तथा शाही खानदानों के पास थी लेकर भूमिहीन कृषकों को दे दी गई। यूरोपी रूस में 100 मिलयन भूमि कृषकों को मिली।

18.8 वित्तीय पूंजीवारी तथा आन्तरिक व वाह्य व्यापार में वृद्धि

रूस में विदेशी पूंजी के आकर्षित होने के कई कारण थे जैसे ऋणों पर सूद तथा छूट की ऊंची दर, सस्ती भूमि (पश्चिमी देशों के मुकाबले); मजदूरी अन्य देशों से कहीं कम तथा विदेशियों द्वारा वस्तुओं के स्थान पर मुद्रा का निर्यात सारा बजट सेना, रेलवे, औद्योगिक प्रगति, कणों की अदायगी पर केन्द्रित था। शिक्षा पर केवल 6.6% प्रतिशत ही विनियोजित था। प्रालीतैरियत ने इस महाविपत्ति को समझ लिया था। लेनिन ने अपनी थेसिस, "सन्निकट महाविपत्ति "तथा" क्या उपाय हो कैसे लड़े मैं" इस पर टिप्पणी भी की। 26 जुलाई से 3 अगस्त 1917 में आयोजित पार्टी की छठी कांग्रेस ने मुख्य रूप से देश को एक आर्थिक रूप से आपत्तिजनक स्थिति में पाया।

इन्डस्ट्री का राष्ट्रीयकरण तथा प्रौलीतैरियत को कन्ट्रोल: देश की प्रमुख वित्तीय संस्थाओं, स्टेट तथा ज्वाइन्ट स्टाक कामर्शियल बैंकों ने नए ढंग से राष्ट्र के पुर्ननिर्माण तथा अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता का कार्य शुरू किया। 14 दिसम्बर 1917 को प्राइवेट ज्वाइन्ट स्टेट बैंको का राष्ट्रीयकरण हुआ। 29 जनवरी 1918 को सोवियत सरकार ने सभी रूसी सरकार के विदेशी ऋणों की समाप्ति की घोषणा कर दी। 28 जून 1918 को बड़ी-बड़ी इन्डस्ट्रीज का राष्ट्रीयकरण हुआ। अक्टूबर 1, 1919 तक समस्त इन्डस्टईज का राष्ट्रीयकरण पूर्ण हो गया।

ख- बीसबी शताब्दी के प्रारंभ से रूसी सरकार की विदेशी व्यापार की नीति 'वित्त मंत्री विशनेगरो रस्की द्वारा प्रचारित "कम खाओ अधिक निर्यात करो" के अनुसार 19 वी शताब्दी के अन्त से प्रथम विश्व युद्ध तक चलती रही थी युद्ध ने रूसी व्यापार को आघात पहुंचाया व खाद्य पदार्थो तथा औद्योगिक वस्तुओं के उत्पादन में कमी तथा मूल्यों में वृद्धि हुई।

1919 के प्रारम्भ में सरकार द्वारा मूल्यों का निर्धारण मजदूरों को संगठित करना तथा उत्पादन बढ़ाने का प्रयास शुरू हुआ। नई सोशिलिस्ट अभिवृत्ति के अनुसार 12 अप्रैल 1919 की रात्रि से मुब्बोतनीक (शनिवार के) नामक श्रमदान की प्रथा आरम्भ की गई। गोएलरों (Goelro) स्कीम सरकार द्वारा नियुक्त एक स्पेशल कमीशन के प्रस्ताव पर आठवी प्लान में (दिसम्बर 1920 में) पास हुई जिसके अंतर्गत रूस को पूर्ण रूप से, विद्युतिकरण हुआ 30 पावर स्टेशन 10-15 वर्ष के बीच बने। केन्द्र का कन्ट्रोल उत्पादन, वितरण तथा बेचने पर बढ़ता गया। लेनिन की चेयरमैनशिप में 1918 के अन्त में एक "अंतर्राष्ट्रीय रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति ने एक सुरक्षा परिषद (मजदूरों कृषकों के हितों की रक्षा के लिए बनाई जो सबसे शक्तिशाली कमेटी थी। सभी भूमि जब्त कर ली गई तथा कृषकों में वितरति की गई। बरोनेज कुर्स्क कलूगा च्योनगिव इत्यादि स्थानों पर कृषकों ने अपनी सशस्त्र टुकड़िया जमीदारों से लड़ने के लिए कटिबद्ध कर लीं। दिसम्बर 1917 जनवरी 1918 में एक कृषि सहकारी संघ नवगोरद में स्थापित हुआ इस में अधिकतर भूमिहीन मजदूर तथा निर्धन कृषक वर्ग था। दिसम्बर 1918 तक 975 कृषि समुदायों तथा 604 सहकारी समितियों ने 98916 लोगों को सुसंगठित कर दिया। नगरों गांवों के मध्य आर्थिक बन्धन बढ़े। 19 वे अधिनियमानुसार खाद्य पदार्थो का व्यापार सरकार की मनोपोली थी चाहे अन्न आयात का क्यों न हो। 1918-21 तक अस्सी हजार मजदूरों को 2700 खाद्य पदार्थो के वितरण की टुकड़ियों गांवों में गई सुरक्षा नीति की आवश्यकता से सेना को स्पेशल राशन मिलता था। मजदूरों को कभी-कभी केवल 50 ग्राम पर ही सन्तुष्ट होना पड़ता।

18.9 सोशलिस्ट सरकार की आर्थिक नीति:

इस संदर्भ में अन्य ग्रन्थों के अतिरिक्त लेनिन द्वारा मार्च अप्रैल 1918 में तैयार की गई पुस्तक "सोवियत सरकार के तत्कालीन कार्य" में इस समाजी ढांचे का अच्छा ब्यौरा मिलता है।" बाल्शविक पार्टी ने रूस को अमीरों तथा शोषणाकारियो से निर्धनों तथा शोषित वर्ग के लिए जीत लिया है और अब उसका प्रबन्धन पहले राष्ट्रीयकरण तथा लेखा व कन्ट्रोल द्वारा और अब राष्ट्रीय स्तर पर उत्पादन में वृद्धि द्वारा होगा। सर्वप्रथम या जनतावादी केन्द्रीयता तथा एकल व सहयोगिता, यद्यपि केन्द्रीय समाजवाद के शत्रु उस क्रांति की विफलता के प्रबन्ध कर रहे थे पर उनकी चेष्टा असफल रही। सोवियत वित्त व्यवस्था ने बार कम्यूनिज्म" (युद्ध कम्यूनिज्म)

नामक योजना के अंतर्गत कुछ आर्थिक उपाय किये। नवम्बर 20, 1920 को 10 मजदूरों से उपर नियुक्त करने वाले कारखाने तथा सभी ऐसी दुकानें जिसमें एक मेकेनिकल इंजन तथा 5 या अधिक कार्यकर्ता हो उनका राष्ट्रीयकरण किया गया।

2- खाद्य योजना जिसके अंतर्गत खाद्य पदार्थो अन्य इत्यादि की मांग वर्गाधार पर अर्थात समृद्ध कृषकों से सब से अधिक, मंझोले कृषकों से केवल नाम मात्र तथा निर्धन कृषकों से कुछ न लेने का प्रबन्ध हुआ। यद्यपि इसमें कोई आर्थिक प्रेरक उत्पादन की वृद्धि के लिए नहीं था फिर भी यही एक मार्ग शत्रुओं को असफल बनाने का था जिससे जमींनदारी बढ़ी।

3- वित्तीय व्यवस्था के पूर्ण निर्यात की स्थिति में बाजार के सम्बन्ध समाप्त करके काम करने वाले लोगों को मुफ्त सभी सुविधायें राशन ट्रांसपोर्ट अस्पताल शिक्षा इत्यादि उपलब्ध कराई जाने लगीं।

4- सब काम करेंगे जो नहीं काम करेगा वह नहीं खायेगा।

इस प्रकार के सुधार जो बार कम्युनिज्म के अंतर्गत हुये वे युद्ध तथा बरर्वादी के परिणाम स्वरूप हुये जो प्रौलीतेरियत की वित्तीय योजना नहीं बल्कि आवश्यकतानुसार काम चलाऊ योजना मात्र थी।

1921 से 1925 का समय आर्थिक बहालों का था जिसमें शान्तिपूर्ण ढंग से पुर्ननिर्माण तथा "नवीन वित्तीय योजना" जो नये कहलाई शुरू हुई। अभी तक पांच प्रकार की अर्थ व्यवस्था थी। (पेतृयि, छोटे समग्री वाले, प्राइवेट पूंजीवादी सरकारी पूंजीवादी, सोशलिस्ट जिसमें आखरी सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली था। मार्च 1921 में दसवी पार्टी कांग्रेस ने नेप ग्रहण करने का एलान कर दिया। असफल बनाने का था इससे अन्न तथा खाद्य पदार्थो के स्टाक जमा होने लगे।

18.10 नेप अथवा नवीन वित्तीय योजना:

नेप के संदर्भ में लेनिन ने अपने 1917-21 के मध्य लिखें निबन्धों मुख्यत: टैक्स इन काईन्ड" में विस्तृत जानकारी दी है। जिसमें मुख्य भूमिका छोटे उत्पादको तथा सहकारी समितियों ने निभाई है। नेप का मुख्य उद्देश्य कृषकों तथा मजदूरों के मध्य आर्थिक तथा राजनैतिक सन्धि थी खेती में बढ़ोत्री हुई एवं कलेक्टिव फार्म तथा कृपण क्षेत्र बढ़ा। 1925 में सभी प्रकार की कृषि सहकारी समितियां एकत्रित हो गई तथा उत्पादकों की सहकारी समितियां तथा समूह व संस्थायें बनीं।

इन्डस्ट्री समाजवाद का आर्थिक आधार थी अतएवं सरकार तथा जनता दोनों ही का ध्यान इस पर केन्द्रित था। 1920-25 के मध्य 41 प्रतिशत वृद्धि हुई। श्रमदान (शनिवार, इतवार को) सहायक सिद्ध हुआ। हेवी इन्डस्ट्री की प्रगति तथा उत्पादन व श्रमजीवियों की संख्या में वृद्धि हुई। कारखाने को प्राइवेट लोगों को पटटे पर देने से नगरों में निर्मित वस्तुओं के ढेर लग गए। लेनिन के विचार में व्यापार ही वह कड़ी था जिससे ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमचक्र में तालमेल हो सकता था। आन्तरिक तथा बाहय दोनों संस्थाओं का पुर्नसंगठन हुआ। समस्त व्यापार को देश में सुप्रीम एकोनिमिक काउन्सिल तथा पीप्लज कमीसारियत फॉर फूडकन्ट्रोल कर रही थी। 1921 में ट्रेड बोर्डो का पुर्नसंगठन हुआ। 1922 तत्पश्चात 1924 में एक स्पेशल

कमीशन अन्तर्तरदेशीय व्यापार के सुसंगठन के लिए बना। 1925 में कमीसारियत फॉर फॉरन ट्रेड ने लगभग सभी यूरोपीय देशों से ट्रेड एग्रीमेंट कर लिए। 1930 से प्राईवेट पूंजी ट्रेड से पूर्ण रूप से वहिष्कृत हो गई। सिक्कों में सुधार हुआ। अक्टूबर 1922 से चेरवोन्तसी (10 रूबल के नोट) निकाले गये जिनसे बजट की क्षतिपूर्ति का उद्देश्य नहीं था बल्कि साधारण रूप से उपयोगी वस्तुओं का प्रचार था । 1926-32 के बीच समाजवादी वित्तीय व्यवस्था की नींव पड़ी जिन्हें प्रथम पंचवर्षीय योजना (1928-30) में एक नया रूप मिला और सोवियत यूनियन एक कृषि प्रधान देश से औद्योगिक शक्ति में ढल गया। 1933 से 1937 तक समाज वादी रंग पर वित्तीय व्यवस्था का निर्माण सम्पन्न हो गया।

18.11 अभ्यासार्थ प्रश्न:

(i) सामन्वादी रूस की अर्थ-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।

(ii) रूस में पूंजीवाद का उदय किस प्रकार हुआ।

(iii) रूस में साम्राज्यवाद के बारे में आप क्या जानते हैं।

(iv) रूस में वित्तीय पूंजीवाद पर प्रकाश डालिये।

(v) समाजवादी सरकार की आर्थिक नीति क्या थी।

(vi) नये आर्थिक नीति क्या थी।

इकाई-19
अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य
19.1 प्रस्तावना
19.2 अमेरिका: खोज व उपनिवेशन
19.3 उपनिवेशन के कारण
19.4 उपनिवेशों की प्रकृति
19.5 वाणिज्यवाद
19.6 अमेरिका में वाणिज्यवाद
19.7 ब्रिटिश नीति में परिवर्तन
19.8 अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम
19.9 स्वतन्त्रता संग्राम का परिणाम
19.10 सारांश
19.11 अभ्यासार्थ प्रश्न
19.12 संदर्भ ग्रन्थ

19.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप अध्ययन करेगें-

किस प्रकार से अमेरिका की खोज हुई।

अमेरीका में उपनिवेशन के क्या कारण थे और अमेरिका में बसने वालों की प्रकृति क्या थी।

योरोप में प्रचलित आर्थिक सिद्धांत वाणिज्यवाद क्या था और उसकी नीतियों का अनुपालन अमेरीका में किस प्रकार से किया गया।

इंग्लैण्ड की नीतियों में परिवर्तन ने किस प्रकार अमेरिका को उत्तेजित किया जिसके फलस्वरूप अमेरिका उपनिवेश ब्रिटेन के विरूद्ध स्वतन्त्रता की लड़ाई आरम्भ करने लगें।

अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम के स्वरूप व उसके परिणाम की चर्चा करेगें।

19.1 प्रस्तावना

अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में घटित एक महत्वपूर्ण घटना थी यह कालान्तर में होने वाली क्रान्तियों की प्रेरणा स्रोत के रूप में रहा वहीं अपनी प्रवृत्ति में संग्राम, जिसे अमेरिकी क्रांति के रूप में भी सम्बोधित किया जाता है, एक विशिष्ट घटना थी। क्योंकि यह क्रान्ति या संग्राम न गरीबी के कारण उत्पन्न असंतोष का परिणाम था और न ही यहां के लोग सामन्ती व्यवस्था से पीड़ित थे। इंग्लैण्ड की आर्थिक नीति के विरूद्ध संघर्ष कर अमेरिकी उपनिवेशों का जन्म एक ऐसे राष्ट्र के रूप में हुआ जो आज विश्व की सबसे बड़ी शक्ति बना है।

19.2 अमेरीका: खोज व उपनिवेशन:

भारत समझते हुए क्रिस्टोफर कोलम्बस ने 1492 में अमेरिका की खोज की, लेकिन इस महाद्वीप का नामकरण इतावली नाविक एमेरिगो वेसपूची पर हुआ, जिसने 1501 में एक नए महाद्वीप खोजने का दावा किया था।

वस्तुत: अमेरिका की खोज व उपनिवेशन योरोपीय इतिहास की घटनाओं का एक परिणाम था। 15 वीं शताब्दी और 16 वीं शताब्दी का आरम्भ योरोप में जिज्ञासा व प्राचीन व्यवस्था के प्रति असंतुष्टि के युग-पुन: जागरण-का चरम बिन्दु था। सामन्तवाद के मग्नावशेष पर आधुनिक राज्य की नींव रखी जा रही थी, राष्ट्र-राज्य की स्थापना के साथ-साथ व्यक्तिगत युद्ध समाप्त हो रहे थे, व्यापारियों व सार्थवाहों को न्यूनतम चुंगी और अधिक, सुरक्षा मिलने लगी थी। अपेक्षाकृत सुधरा आर्थिक जीवन नई खोजों व अनुसंधान को प्रेरित कर रहा था, जिसे छापेखानों के प्रयोग से सुलभ हुए परिष्कृत चार्टो नक्शों व पञ्चागों तथा कम्पास के प्रयोग ने सम्भव बना दिया था। ये परिस्थितियाँ व्यापारिक पूंजीवाद के विकास का मार्ग तैयार कर रहीं थीं। पूरब के साथ हो रहे लाभकारी व्यापार में हिस्सा लेने हेतु नए व्यापारिक मार्ग को खोजने का प्रयास अनेक देश कर रहे थे। स्पेन के राजा ने इतावली नाविक कोलम्बस को मौका दिया, जो 'पृथ्वी गोल है'- इस वैज्ञानिक तथ्य को स्वीकार करते हुए पश्चिम की ओर चला। उसका विचार गलत नहीं था, गलत तो था उसका पृथ्वी को इतनी छोटी मानने का अनुमान।

भारत के स्थान पर अमेरिकी महाद्वीप की खोज का योरोप ने स्वागत ही किया। राजनीतिज्ञों ने इसमें नए साम्राज्य बनाने का स्वप्न देखा, अपनी सम्पत्ति बढ़ाने वाले एक स्रोत के रूप में कुलीनों व व्यापारियों ने इसकी लालसा की, तो जनसाधारण को यह एक नया घर लगा जहाँ वे पुरानी दुनिया के धार्मिक, राजनीतिक व आर्थिक अत्याचारों से मुक्ति पाने की आशा कर सकते थे। फलत: अमेरिका में बस्तियां बसने लगीं। सर्वप्रथम स्पेन, फिर फ्रांस व हालैण्ड यहां उपनिवेशन करने लगे। इंग्लैण्ड इसमें देरी से शामिल हुआ। स्टुअर्ट राजा जेम्स प्रथम ने 1606 में लन्दन और प्लीमथ कम्पनियों को अमेरिका में व्यापार करने के लिए बस्ती बनाने की अनुमति दी। 1607 में कप्तान क्रिस्टोफर न्यूपोर्ट के नेतृत्व में 120 अंग्रेजों ने वर्जिनिया क्षेत्र की जेम्स नदी के तट पर 'जेम्स टाउन' की बस्ती बसाई। आरम्भिक कठिनाईयों के बाद तम्बाकू और कपास की खेती से प्राप्त सम्पन्नता, ने अन्य बस्तियाँ बसाने का रास्ता सुझाया और इंग्लैण्ड के कुल 13 उपनिवेश उत्तरी अमेरिका में बन गए। ये उपनिवेश थे- (1) जेम्स टाउन (2) मैरीलैण्ड (3) न्यूयार्क (4) हैम्पशायर (5) मैसाचूसेट्स (6) रोडस् आइलैण्ड (7) उत्तरी कैरोलीना (8) दक्षिण कैरोलीना (9) कनेक्टिकट (10) पेन्सिलवोनिया (11) न्यूजर्सी (12) देलावियर और (13) जार्जिया।

19.3: उपनिवेशन के कारण

अमेरिका जाना और जाकर बसना कोई आसान काम न था। अपर्याप्त भोजन के साथ बिमारी व तूफानों से भरी 2-3 माह की समुद्री यात्रा के बाद अमेरिकी मूल निवासियों, घने जंगलों व लम्बी घास के मैदानों के साथ संघर्ष कर अपना अस्तित्व कायम रखना बड़े जीवट का

काम था। स्पष्टत: यहां आने वाले किसी न किसी विवशतावश यहां आए थे। आइए उन कारणों को जाने जो अमेरिका में लोगों को लाए थे, ताकि हम अमेरिका बसने वालों की मानसिकता को समझ सके।

अमेरिका में बसाने के लिए व्यावसायिक कम्पनीयों ने अपने प्रचार पत्रों में उपनिवेशों का आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया था ताकि समाज का सभी तब का इस ओर आकर्षित हो सके। प्रचार-पत्रों' का एक ही सार था- आर्थिक उन्नति। समृद्धशाली और लाभ पाएगें तो गरीबों को मिलेगा नया जीवन आरम्भ करने का अवसर। कारीगर सरकारी श्रेणी के नियमों के आर्थिक बन्धन से बचने की इच्छा से अमेरिका जाना चाहते थे तो मेहनत की कमाई को सामन्ती चुगंल से बचाने के लिए किसान तैयार था। सामन्तों के युवा बेटे, दरिद्र हो रहे मध्यमवर्ग की अभिलाषा अमेरिका में नया जीवन शुरू करने की थी। व्यापारिक कम्पनियों के लिए अमेरिका सोना, फर, चीनी, तम्बाकू कोका व अन्य उत्पाद का स्रोत ही नहीं कालांतर में उनके तैयार माल के खपत हेतु बाजार भी था।

फिर 16 वीं व 17 वीं सदी में यह विश्वास, कि इंग्लैण्ड की जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है, नतीजन बेरोजगारी भी बढ़ रही है, घर कर रहा था। इंग्लैण्ड ही नहीं योरोप में काम करने वाले तो काफी थे, पर उन्हें खपाने के स्रोत कम थे, जबकि अमेरिका में इसके विपरीत था। नर्तजन बेरोजगारी की समाप्ति व बढ़ती जनसंख्या की खपत अमेरिका द्वारा ही सम्भव थी।

उपनिवेशन के राजनीतिक कारण भी थे। हर देश अमेरिका में अधिक से अधिक क्षेत्र हड़पना चाहता था। दूसरी ओर राजनीतिक अस्थिरता व दण्ड का भय भी लोगों को अमेरिका में बसने के लिए उकसा रहा था। इंग्लैण्ड के चार्ल्स प्रथम के स्वेच्छाकारी शासन से तंग आकर लोग उपनिवेशों में बसे, तो क्रामवेल के शासन में राजा के सहायक सरदार व अनुयायी भाग्य आजमाने अमेरिका बसे।

धार्मिक उथल-पुथल ने भी बहुत से लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया। धार्मिक स्वतन्त्रता पाने हेतु अलगावादी व प्यूरिटनों ने न्यू-इंग्लैण्ड की स्थापना की। विलियम पेन और उसके साथी क्वेकरों ने धार्मिक दृष्टि से ही पेन्सिलवेनिया बसाया और केथोलिकों ने मेरीलैण्ड को आबाद किया।

बसने वालों में अपराधी भी थे, जिन्हें न्यायालय ने अमेरिका बसने का मौका दिया। ये "सात वर्ष के सरकार यात्री" कहलाते थे। सात वर्ष पश्चात् वे स्वतन्त्र थे- पर यह स्वतन्त्रता दासों को न थी, जो एक धब्बे के रूप में अमेरीकी समाज में थे। 1619 में डच द्वारा जेम्स टाउन में पहला निग्रो दास बेचा गया उसके बाद दासों की संख्या में वृद्धि ही हुई। बेनक्रोफ्ट के अनुसार 1714 में 59,000 और 1754 में 263,000 दास थे। 1790 की पहली जनगणना में इनकी संख्या 6907,000 से अधिक ही थी।

19.4 उपनिवेशों की प्रकृति:

इस प्रकार अमेरिका आकर बसने वालों की मानसिकता अतीत से बेहतर जीवन जीने की ललक से प्रेरित थी, वे साहसी व पराक्रमी थे, क्योंकि तभी वे जी सकते थे। फिर, अमेरिका में

उपनिवेशों का विकास किसी निश्चित परम्परा या निर्देश के अन्तर्गत नहीं हुआ। उपनिवेशन करने वाली कम्पनियों या व्यक्तियों के समक्ष प्रशासन की कोई निश्चित रूपरेखा न थी और न ही अंग्रेज सरकार ने इनके संगठन हेतु कोई व्यापक निर्देश दिए थे। कम्पनियां अपनी इच्छानुसार प्रशासन चलाती थीं। पर प्रशासन में स्वतन्त्र नागरिकों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों का सहयोग व सहमति परम्परा बन चली थी, हालांकि सम्राट गर्वनर व उसकी कार्यकारिणी समिति नियुक्त करता था। स्वशासन की भावना ही नहीं, अपने चरित्र में भी अमेरिका बसने वाले अंग्रेज इंग्लैण्ड के अग्रेंजों से भिन्न थे, जैसा इतिहासकार ट्रेवेलियन बताता है कि यहां आकर उन्होंने अपनी सारी पूर्व धारणाओं और रीति-रिवाजों को त्याग कर नया जीवन अपनाया था और अब वे 'अमेरिकी' बन गए थे। अमेरिका में सामंती अभिजात्य व्यवस्था नहीं थी, वे उपाधियों व पारिवारिक विशेषाधिकारों का मखोल उड़ाते थे। पश्चिमी योरोप की तुलना में अमेरिका धार्मिक स्वतन्त्रता और सहिष्णुता का कल्पना लोक था। हांलाकि, यहां भी 'डायनों' पर मुकदमें चलाए जाते थे। फिर भी विभिन्न धर्मो के अनुयायी अपनी अलग-अलग जिन्दगी बिताते थे और प्राय: ही धर्माध्यक्षों तथा धार्मिक कर्मकाण्डों की क्रुर निरकुंशता से त्रस्त रहते थे। उन्होंने स्वयं ही शिक्षा पर जोर दिया। 1683 में पेन्सिलवेनिया में बच्चों के लिए शिक्षण संस्थाएं स्थापित कीं। 1686 में हारवर्ड कॉलेज बना। स्त्रियों के लिए ललित कलाओं की शिक्षा की विशेष व्यवस्था की गई। फेकलिन द्वारा स्थापित विचार केन्द्र कालान्तर में अमेरिकन फिलोसोफिकल सोसायटी के नाम से विख्यात हुआ। कैम्ब्रिज शहर में पहला छापा खाना स्थापित हुआ और 1704 से बोस्टन से पहला समाचार-पत्र प्रकाशित होना आरम्भ हुआ।

इस प्रकार आरम्भ से ही परिस्थितियों के अनुरूप अपना विकास करने में स्वतन्त्र उपनिवेशों में इंग्लैण्ड का प्रभाव व नियंत्रण का अभाव था। पहले अंग्रेज के बसने के 150 वर्ष बाद तो इंग्लैण्ड के प्रति प्रेम कम होना ही था। जैसे न्यू इंग्लैण्ड, जहां बहुसंख्यक अंग्रेज ही थे, के निवासी, समकालीन इतिहासकार डेविड रैमसे के शब्दों में "मातृ-देश (इंग्लैण्ड) के बारे में कम ही जानते थे, जो जानते थे वह यह था कि यह एक सुदूर देश है जहां के राजा ने उनके पूर्वजों को प्रताड़ित किया और अमेरिका के जगंलों में मरने-खपने को भेज दिया"। बिना बाहरी सहायता या हस्तक्षेप के अपना भाग्य स्वयं बनाने वाले अमेरिकी ने 1776 में इंग्लैण्ड के विरूद्ध स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। ऐसा क्यों किया यह जानने के लिए हमें जस आर्थिक नीति को समझना होगा जिसकी वजह से उपनिवेशन हुआ था। यह आर्थिक नीति थीं वाणिज्यवाद।

19.5 वाणिज्यवाद

वाणिज्यवाद सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक प्रचलित एक सामान्य आर्थिक सिद्धांत था। इसका लक्ष्य शक्तिशाली, सम्पन्न व स्वतन्त्र राज्य-राष्ट्र का निर्माण करना था, जो अनुकूल व्यापार संतुलन व आर्थिक स्वतन्त्रता को प्रोन्नत कर पाया जा सकता है। इसके लिए स्वयं की जहाजरानी हो, ताकि उत्पादों को ले जाने हेतु विदेशी जहाजों पर निर्भरता न हो। अपनी जहाजरानी जहां व्यापार के संचालन में होने वाले लाभ को संचित करेगा वहीं युद्ध काल में योग्य नौ सेना व प्रशिक्षित नौ सैनिकों का योगदान भी देगी। दूसरा, वाणिज्यवादी चाहते थे गृह उद्योगों का सरंक्षण व संवर्धन ताकि औद्योगिक रूप में आत्म निर्भरता रहे साथ ही नागरिकों

को रोजगार मिल सके। तीसरा, उत्पादकों को पर्याप्त कच्चामाल व खाद्य सामग्री की आपूर्ति ताकि घरेलू कृषि को सहायता व सुरक्षा मिल सके। और अन्त में, वाणिज्यवादी आशा करते थे कि वे लाभदायक व्यापारिक संतुलन बना सकेंगें ताकि राष्ट्र में अधिक से अधिक मुद्रा रह सके। उनका विश्वास था वही राष्ट्र सबसे योग्य व सुदृढ़ स्थिति पर रहता है जिसके पास अधिक से अधिक सोना व चांदी हो।

19.6 अमेरीका में वाणिज्यवाद

स्पष्ट है वाणिज्यवाद की नीति का मुख्य लक्ष्य मातृ देश की भलाई है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर उपनिवशेन हुआ था। इसी को ध्यान रखकर 1651 में इंग्लैण्ड ने अपना प्रसिद्ध जहाजरानी अधिनियम पारित किया था, जिसके अनुसार (1) उपनिवेशवासी केवल इंग्लैण्ड के जहाज से ही माल मंगा व भेज सकते हैं, (2) वे अन्य देशों से अत्वल तो माल आयात नहीं कर सकते हैं, लेकिन यदि वे ऐसा करते हैं तो केवल इंग्लैण्ड के जहाजों से ही करें, इन जहाजों के नाविक भी अंग्रेज हों। इस अधिनियम को 1660 और 1663 में और मजबूती प्रदान की गई ताकि आयात पर नियंत्रण रखा जाए। योरोपीय माल पर भारी चुंगीया लगाई गई। इसी प्रकार निर्यात पर नियंत्रण हेतु 1651 में ही व्यापारिक नियम पारित किए गए। जिसके तहत अमेरिका, एशिया व अफ़्रीका में अंग्रेज बागानों में उत्पन्न या निर्मित होने वाली चीनी, तम्बाकू कपास, नील, अदरक, पाण्डुद् (पीला रंग देने वाली लकड़ी) और रंग देने वाली अन्य वनस्पति इंग्लैण्ड के अलावा और कहीं नहीं भेजे जा सकते हैं। 1706 में इस सूची में राल, अलकतरा, तारपीन, सन, शहतीर और सूत; 1721 में ताम्र अयस्क, ऊद-बिलाव व अन्य जानवरों के फर; 1733 में शीरा, 1764 में व्हेल के पंख, लोहा, इमारती लकड़ी व कच्चा रेशम जोड़ दिया गया।

न सिर्फ आयात व निर्यात बल्कि इंग्लैण्ड की रूचि उत्पादक संस्थानों पर नियंत्रण रखने की थी ताकि उपनिवेशों के उद्योग इंग्लैण्ड से स्पर्द्धा योग्य न बन सके। गर्वनरों को निर्देश था कि वे "सभी औद्योगिक निर्माण को हतोत्साहित करें और इस तरह के कोई भी लक्षण दिखने पर सूचित करें।" हांलाकि ऐसा करना नितांत असम्भव था, फलत: लघु उद्योग पनपते रहे साथ ही इंग्लैण्ड द्वारा नियंत्रण रखने की एक याचिका के आधार पर ब्रिटिश संसद ने जांच में पाया कि न्यू इंग्लैण्ड व न्यूयार्क में प्रतिवर्ष 10,000 हैट निर्मित हो रहे हैं, तो तुरंत भी कानून पारित किया गया: (1) 1732 से कोई भी हैट इंग्लैण्ड या एक उपनिवेश से दूसरे उपनिवेश को नहीं भेजा जाएगा। (2) सात वर्ष की प्रशिक्षुता के बिना कोई व्यक्ति हैट नहीं बनाएगा। किसी भी उस्ताद के पास दो से ज्यादा प्रशिक्षु नहीं हो सकते हैं, जो सात वर्ष से कम समय तक सेवा नहीं कर सकते है। निग्रो प्रशिक्षु नही हो सकता है। जो भी इस कानून को तोड़ेगा उसे 500 पौण्ड का जुर्माना देना होगा।

इस प्रकार के नियंत्रण से अमेरिकी आर्थिक जीवन कितना प्रभावित हुआ यह तो हम आगे देखेगें ही पर इस तथ्य से अमेरिकी अनजान न रहे कि इंग्लैण्ड उनकी बानिस्पत अपनी प्रजा के हितों की रक्षा हेतु अधिक तत्पर रहता है। उन्होंने इस बात पर अपना रोष जाहिर किया। 29 अप्रैल 1765 का 'बोस्टेन गजट' अखबार शिकायत करता है "उपनिवेश का निवासी

बटन, घोड़े की नाल या पेंच तक नहीं बना सकता है, लेकिन ब्रिटेन का कोई भी कालीख लगा लोहार या सम्मानित बटन बनाने वाला इस बात पर झल्लाएगा व चीखेगा कि धूर्त अमेरिकी रिपब्लिकन द्वारा उसके महान काम को अत्यन्त भयानक तरीके से क्षतिग्रस्त व लूटा गया है।" अमेरिकी इस बात पर क्षुब्ध थे कि ब्रिटिश सरकार इस झल्लाहट व चीत्कम को गम्भीरता से लेती है।

असामान्य व्यापार सतुंलन के कारण अमेरिका में जो कुछ भी धातु मुद्रा चलती थी-अंग्रेजी, पुर्तगाली था स्पेनी-वह इंग्लैण्ड चली जाती थी। व्यापार की मांग देखते हुए मैसाचूसेट्स ने कागजी मुद्रा का चलन 1690 में आरम्भ किया, 1711 में कनेक्टिकट, हैम्पशायर, रोड्स आइलैण्ड, न्यूयार्क, न्यूजर्सी और बाद में अन्य उपनिवेशों में कागजी मुद्रा का चलन आरम्भ हुआ। सोने के आधार से अधिक मुद्रा की छपाई से अवमूल्यन होना ही था, नतीजन 1751 में ब्रिटिश संसद ने न्यू इंग्लैण्ड, बाद में 1764 में बचे हुए उपनिवेशों को मुद्रा छापने के अधिकार से वंचित कर दिया। इंग्लैण्ड का यह कदम अंग्रेज ऋणदाताओं की सुरक्षा के लिए उठा था, लेकिन यह मुद्रा स्फीति अमेरिका के छोटे-छोटे कर्जदार किसानों व दक्षिण के बागान मालिकों को उनके संकट' से उबारने में मदद देती। स्पष्ट है, इंग्लैण्ड की कार्यवाही ने छोटे किसानों व बागान मालिकों को रूष्ट किया।

यह ध्यान में रखने वाली बात है कि इंग्लैण्ड की स्वार्थी आर्थिक नीति अमेरिका के लिए घातक सिद्ध न हुई बल्कि 18 वो शताब्दी में अमेरिकी असामान्य आर्थिक समृद्धि व राजनीतिक स्वतन्त्रता भोग रहे थे। एडम स्मिथ के शब्दों में "अन्य योरोपीय देशों की तुलना में ब्रिटिश शासन कम कठोर व आक्रमक था।" यह समृद्धि मुख्यत: तीन कारणों से थी: (1) उपनिवेशों के हित मातृदेश के समानान्तर थे, (2) कुछ उत्पादो पर इंग्लैण्ड द्वारा पेश की गई आर्थिक सहायता उनके तार्किक विरास तथा उपनिवेश-वासियों के लिए सम्पति का स्रोत थे, और (3) सबसे महत्वपूर्ण कारण था अधिक हानिकारक नियम या तो टाल दिए गए या फिर लागू ही नहीं किए। गए। 18 वीं सदी के पूर्वाद्ध में इंग्लैण्ड रॉबर्ट वेलपोल की नीति, "क्वाइटा नॉन मोवेरे" (Let sleeping dogs lie, सोने वालों को सोने दो) का अनुसरण कर रहा था। "हितकारी उपेक्षा" के इस काल में अमेरिका का वेस्टइण्डीज से व्यापार बढ़ रहा था। एक अनुमान है कि 1700 में बोस्टेन का आधा व्यापार गैर कानूनी था।

19.7 ब्रिटिश नीति में परिवर्तन

ब्रिटेन की नीति में 1763 से परिवर्तन आना आरम्भ हुआ, जब वह फ्रांस के विरूद्ध सप्तवर्षीय युद्ध (1756-63) में विजयी हुआ। इस युद्ध की शुरूआत योरोप में हुई थी पर अमेरिका मे, भी यह-उतनी ही भंयकरता से लड़ा गया। इंग्लैंड को जीत के बाद उत्तरी अमेरिका का विस्तृत फ्रांसिसी साम्राज्य अधिकार में मिला। नवविजित क्षेत्र पर इंग्लैण्ड की नीति पूर्ववर्ती नीति से अलग थी। पहले बस्तियां बसाने में प्रोत्साहन हेतु बसने वालों को छोटे-छोटे प्लाट तथा सट्टेबाज व्यापारियों को विशाल भूमि इसी शर्त पर दी जाती थी कि वे अधिक से अधिक संख्या में परिवार बसाएगें। फ्रांसीसी व स्पेनी खतरे से सुरक्षा करने व फर के व्यापार की तरक्की के

लिए सीमा पर बसावट को प्रोत्साहन दिया जाता था। 1763 में फ्रांस की हार के बाद उपनिवेशी विशाल विजित क्षेत्र पर अपना अधिकार करना चाहते थे जबकि अंग्रेज अपना फायदा ध्यान में रख रहे थे। यहां रहने वाले फ्रांसीसी नागरिकों व रेड इण्डियनों को अपने आधीन। रखना व उनकी सुरक्षा करना एक मुख्य समस्या थी। इसलिए 1763 में शाही घोषणा द्वारा ऐलेगनीज, फ्लेरिडा, मिसिसिपी और क्यूबेक के बीच का समूचा क्षेत्र रेड इण्डियनों के लिए सुरक्षित कर दिया गया। इससे उपनिवेशयों का पश्चिम की ओर प्रसार रूक गया, पर वे अंग्रेज सरकार के प्रति रूष्ट भी हो गए।

सप्तवर्षीय युद्ध के बाद नए प्रधानमंत्री ग्रेनाविल तथा बोर्ड ऑफ ट्रेड के अध्यक्ष टाउनशेण्ड ने, जार्ज तृतीय के समर्थन पर "हितकारी उपेक्षा" की नीति को त्यागने का निश्चय किया, ताकि युद्ध से हुए भारी कर्जे की उदायगी हो सके साथ ही उपनिवेशों की सुरक्षा की जा सके। जार्ज तृतीय टोरी विचारधारा का था और उसके विचार से व्हिग दल ने उपनिवेशों को पर्याप्त ढील दे रखी है। इंग्लैण्ड की नीति अब नियमों को कठोरता से लागू करने की थी।

इस सम्बन्ध में **चीनी अधिनियम** (1764) पहला कदम था, इसने 1733 के **शीरा अधिनियम** द्वारा लगी चुंगी को आधा कर दिया, याने प्रति गैलन 6 पेन्स के स्थान पर 3 पेन्स। यह उम्मीद की गई कि इससे व्यापारी अधिक ईमानदार बनेगा और यह कदम राजस्व बढ़ाने में सहायक होगा। यहां यह याद रखने की बात है कि औपनिवेशिक व्यापार में चीनी प्रमुख स्थान रखती थी। 1760 तक अंग्रेज व्यापारियों ने करीबन 6 करोड़ पौण्ड की पूंजी चीनी पर लगा रखी थी, यह अन्य व्यय का 6 गुणा थी। ब्रिटिश संसद में 70 चीनी लार्डस बैठा करते थे जो अपने हितों की रक्षा करते थे। लेकिन उपनिवेश फ्रांस की तुलना में उनकी चीनी व शीरा 25 से 40 प्रतिशत कम खरीद रहे थे। यह बात ब्रिटिश सरकार को पंसद न थी। चीनी अधिनियम द्वारा इंग्लैण्ड ने उपनिवेशों पर आने वाली चीनी पर चुंगी लगा दी। चुंगी लेने का कार्य अंग्रेज नौसेना अधिकारी करेगें तथा तस्करी के मामलों की सुनवाई नौ सैनिक कोर्ट में होगी। **खोज-वारण्ट अधिनियम** के द्वारा राजस्व अधिकारियों को किसी भी मकान की तलाशी लेने का अधिकार मिल गया ताकि तस्करी को रोका जा सके। चीनी के साथ-साथ नील, कॉफी, शराब व रेशम पर चुंगी लगा दी गई ताकि दूसरे देशों से आयात न हो सके। अमेरिकी उपनिवेशों में इन अधिनियम की प्रतिक्रियाएं आरम्भ होने लगीं ।

1765 में **स्टाम्प अधिनियम** आया, जिसके द्वारा लाइसेन्स, समझौते, करारनामा, क्रय-विक्रय पत्रों, वसीयत-नामा, अखबार, पञ्चांग, पत्र व अन्य कागजों पर आधे पेन्स से लेकर 10 पौण्ड तक का स्टाम्प (टिकट) लगाना अनिवार्य हो गया। इस अधिनियम के दायरे में व्यापारी, बुद्धिजीवी व जनसाधारण सभी आते थे नतीजन इसका विरोध किया गया। जब याचिकाओं व लोकावेदनों का कोई असर न हुआ तब अंग्रेजी माल का बहिष्कार किया गया। वर्जीनिया, जहां इस अधिनियम का सर्वप्रथम विरोध किया गया था, की प्रतिनिधि सभा में पैट्रिक हैनरी ने जार्ज तृतीय को एक निरंकुश शासक बताया प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं नारा बुलन्द हुआ। टैक्स वसूलने वाला के पुतले जलाए गए। कई उपनिवेशों में **"सन्स ऑफ लिबर्टी"** (स्वतन्त्रता पुत्रों) नाम के सगंठन बनाए गए। पैट्रिक हैनरी ने जेम्स ओटिस के सहयोग से

न्यूयार्क में अक्टूबर 1765 में नौ उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने इन अधिनियमों का विरोध किया। विरोध व बहिष्कार के आगे ब्रिटिश सरकार झुक गई। 1766 में स्टाम्प अधिनियम वापस ले लिया गया और चीनी अधिनियम में संशोधन किया गया।

सम्भावतया मामला यहीं समाप्त हो जाता पर 1765 ही में क्वार्टरिंग अधिनियम पारित किया था, जिसके अन्तर्गत विशेष जिलों में रखी गई अंग्रेज सेना के रहने, खाने का इंतजाम उपनिवेशों को करना था। 1767 में चार्ल्स टाउनशेण्ड ने संसद को **टाउनशेण्ड अधिनियम** पारित करने को बाध्य किया जिसके अन्तर्गत कांच, कागज, रंग, 'सीसा (सफेद व लाल), व चाय पर कर लगाने का प्रावधान रखा गया। कर अधिक न थे पर ये वस्तुएं सामान्य उपयोग की थीं, अत: इससे सभी को प्रभावित होना था। इसी के साथ टाउनशेण्ड ने तटकर अधिकरी मण्डल की स्थापना कीं, जो तस्करी को समाप्त करने के लिए था। इस मण्डल का प्रधान कार्यालय बोस्टन में था। टाउनशेण्ड ने एक और कानून पारित कराया जिसके अन्तर्गत अमेरिका में काम करने वाले ब्रिटिश अधिकारियों पर कोई अपराध करने पर अभियोग केवल इंग्लैण्ड में ही चलाया जा सकता है। उपनिवेश वासियों के लिए इस कानून का अर्थ ब्रिटेन द्वारा अपने अपराधी अधिकारियों को इंग्लैण्ड में आश्रय देना था।

क्वार्टरिंग अधिनियम का मैसाचूसैट्स की एसमेम्बली ने कड़ा विरोध किया। न्यूयार्क की एसेम्बली ने इसका अनुसरण किया तो टाउनशेण्ड ने न्यूयार्क एसेम्बली को भंग कर दिया। इससे पूरे अमेरिका में क्रोध की अग्नि भभक उठी। अग्रेजी माल का आयात 1,363,000 पौण्ड था वहीं बहिष्कार 1769 में 504,000 पौण्ड रह गया। इसने इंग्लैण्ड व अमेरिका दोनों में आर्थिक अस्थिरता को जन्म दिया नतीजन 177 में टाउनशेण्ड अधिनियम वापस ले लिए गए।

लेकिन उपनिवेशों पर सत्ता दर्शाने और इंग्लैण्ड को कर लगाने का अधिकार है इस सिद्धांत के पालन हेतु चाय पर प्रति पौण्ड 3 पैन्स का कर बरकरार रखा गया। हालांकि इंग्लैण्ड से आने वाली चाय पर प्रति पौण्ड 12 पैन्स की छूट दी गई याने इग्लैण्ड से सस्ती चाय अमेरिका को दी जाने लगी। इग्लैण्ड व अमेरिका के मध्य व्यापारिक गतिविधियां फिर से चलने लगीं 1770 में जो आयात 1,6०4,000 पौण्ड था वह 1771 में 4,200 ,000 पौण्ड हो गया। व्यापारियों ने क्रान्तिकारी नेताओं और जन समूह, जिनका उपयोग वे अंग्रेजों के विरूद्ध करते थे, से मुंह मोड़ लिया।

ब्रिटिश सरकार व उपनिवेशों के मध्य तनाव फिर भी कम न हुआ, इसे क्रान्तिकारी नेताओं पुरानी औपनिवेशिक नीति को बरकरार रखने वाले इंग्लैण्ड व उसके एजेन्टों ने खत्म न होने दिया। मैसाचूसेट्स में सेम्युअल एडम्स ने क्रान्तिकारी भावना खत्म न होने दी। समान विचारधारा वाले पेट्रिक हैनरी और थॉमस जेफरसन जैसे व्यक्तियों के साथ मिलकर क्रान्तिकारी विचार अमेरिका के कौने-कोने में पहुंचाया जाने लगा। इधर ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जिसके साथ कई ब्रिटिश राजनीतिज्ञ व पूंजीपति थे, को दीवालिए से बचाने के प्रयास द्वारा अमेरिका के साथ तनाव समाप्त करने का मौका खत्म कर दिया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पास। करोड़ 70 लाख पौण्ड चाय थी, जिसे बेच कर दीवाला हटाया जा सकता था। इसके कम्पनी को बाजार और उपनिवेशवासियों को सस्ती चाय मिल सकती थी। इंग्लैण्ड ने यह किया।

1773 के चाय अधिनियम के पहले उपनिवेशवासी चाय को लाभ देते थे-ईस्ट इण्डिया कम्पनी को, अंग्रेज बिचौलिए को, अमेरिका बिचोलिए को और स्थानीय व्यापारी को कम्पनी को सीधे आयात करने की आज्ञा देने का अर्थ हुआ दो बिचौलियो को व्यापार से हटा देना। इसका अर्थ यह भी हुआ कम्पनी को चाय का एकाधिकार देना, याने किसी भी कम्पनी को किसी भी माल का एकाधिकार दिया जा सकता है। स्पष्ट है कर के अतिरिक्त अन्य मामले भी महत्वपूर्ण बन गए थे। तटवर्ती नगरों का शक्तिशाली वर्ग विरोध में उठ खड़ा हुआ। हैनाकॉक जैसे व्यापारी, जो चाय के बड़े आयातक ये, चाय अधिनियम के विरोधी हो गए।

चाय विरोध की प्रसिद्ध घटना 16 दिसम्बर 1773 में बोस्टन बंदरगाह में घटित हुई जो 'बोस्टन टी पार्टी' के नाम से विख्यात है। इस दिन सैम्युअल एडम्स और उसके सहयोगी रेड-इण्डियनों की पौशाक में बंदरगाह पर खड़े चाय के जहाजों पर चढ़ गए और चाय 342 पेटियां समुद्र में फैंक दी। 'बोस्टन टी पार्टी' ब्रिटिश सत्ता पर सीधे प्रहार थी और संसद ने इसके जवाब में चाय अनुशासनात्मक उपाय, जो **"असहनीय अधिनियम"** कहलाते हैं, पारित किए: बोस्टन बंदरगाह को तब तक के लिए बंद कर दिया गया जब तक नष्ट नाय के हर्जाना नहीं मिलता। मैसाचूसैट्स के चार्टर के उदारवादी स्वरूप को बदल दिया गया। वहां चुने हुए प्रतिनिधियों के स्थान पर सरकार द्वारा परामर्शदाता नियुक्त किए गए। सभाओं पर रोक लगा दी गई। तीसरा, मैसाचूसैट्स में सैनिकों को रखने के उद्देश्य से 1765 को क्वार्टरिंग अधिनियम में संशोधन करना। और चौथा डयूटी न कर पाने वाले उपनिवेश के एजेन्टों पर इंग्लैण्ड में मुकदमा। दूसरे शब्दों में, संसद अपनी शक्ति के प्रदर्शन पर तुली हुई थी। वास्तव में इसके पीछे जार्ज तृतीय का भी हाथ था।

अभी बोस्टन की घटना की उत्तेजना बढ़ ही रही थी कि एक और कानून पारित किया गया, **'क्यूबेक कानून'**, इसका बोस्टन से कुछ लेना देना न था। इस कानून द्वारा ओहियों तथा ग्रेट लेक के मध्य का क्षेत्र क्यूबेक प्रांत को सौंप दिया गया। इसने बर्जीनिया, न्यूयार्क, कनेक्टिकट, और मैसाचूसैट्स के दावों को खत्म कर दिया। क्रान्तिकारियों के लिए यह कानून भी विरोध का हथियार बन गया। तुरंत अग्रेंजी माल का तीसरा बहिष्कार हुआ। 1774 में 2,590,000 पौण्ड का आयात 1775 में 201,000 पौण्ड हो गया। यह गिरावट अग्रेंजी अर्थव्यवस्था को धक्के देने वाली थी। संसद में एक के बाद एक याचिकाएं भेजी जाने लगी, पर राजा व उसके मंत्री झुके नहीं। मार्च 1775 में मैसाचूसैट्स को विद्रोही करार कर दिया गया। न्यू इंग्लैण्ड के मछुआरों को ग्रेट बैंक में जाने से मना कर दिया गया। इंग्लैण्ड ने उपनिवेशों के साथ हो रहे तनाव को खत्म करने का कोई प्रयास न किया। दूसरी तरफ उपनिवेशों ने इंग्लैण्ड के प्रति अपना विरोध बरकरार रखा।

19.8 अमेरीका स्वतन्त्रता संग्राम:

प्रथम महाद्वीपीय कांग्रेज अधिवेशन

बोस्टन बंदरगाह की घेराबन्दी और क्यूबेट एक्ट के प्रश्न को लेकर 5 सितम्बर 1774 को फिलाडेल्फिया में उपनिवेशो का पहला सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में जोर्जिया को छोडकर 12 उपनिवेशों की विधान सभा ने अपने प्रतिनिधि भेजे। सम्मेलन में यद्यपि इंग्लैण्ड के प्रति

विरोध बढ़ता दिखाई दे रहा था लेकिन कोई भी उपनिवेश इंग्लैण्ड से सम्बन्ध विच्छेद करने को तैयार नहीं था। ब्रिटिश संसद की भर्त्सना करने के साथ-साथ जार्ज तृतीय को एक याचना-पत्र भेजा गया, जिसमें उपनिवेशों पर लगाए प्रतिबन्धों को हटाने की याचना की गई थी। लेकिन इसका इंग्लैण्ड पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जार्ज ने इसे ठुकरा दिया फलत: क्रान्तिकारी और शक्तिशाली हो गए। हालैण्ड के प्रति भक्ति रखने वाले अमेरिकी टोरी भी क्रान्तिकारियो का साथ देने को बाध्य हो गए। जगह-जगह स्वयं सेवकों की सुरक्षा समितियां स्थापित की गई और व्यापार बहिष्कार किया जाने लगा।

18 अप्रैल 1775 को क्रांतिकारियों व अंग्रेज सेना के मध्य पहली बार आमना-सामना हुआ। मैसाचूसैट्स के स्वंय सेवकों ने कनकार्ड में गोला-बारूद इकट्ठा कर रखा था। ब्रिटिश सेना के जनरल गेज ने इस युद्ध सामग्री को जब्त करने और जॉन हैन कॉक सैम्युअल एडम्स को गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। स्वंय सेवकों की एक छोटी टुकड़ी ने लेक्सिंगटन गांव के पास ब्रिटिश सेना का मार्ग रोकने का विफल प्रयास किया। आठ स्वंय सेवक मारे गए यह खबर सभी उपनिवेशों में फैल गई। कनकार्ड से वापस लौटती अंग्रेज सेना को हजारों स्वंय सेवकों से टक्कर लेनी पड़ी और 2500 सैनिक मारे गए। इसके बाद सशस्त्र विद्रोह की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। जगह-जगह स्वंय सेवक सैन्य प्रशिक्षण पाने लगे।

द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस:

लेक्सिगंटन और कनकार्ड की घटनाओं के बाद 10 मई 1775 को फिलाडेल्फिया में द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस की बैठक हुई। जॉन हैनकॉक इसके अध्यक्ष बने और इसमें थोमस जेफरसन, बेन्जामिन फ्रैकलिन जैसे नेता उपस्थित थे। काफी वाद-विवाद के बाद यह स्पष्ट किया गया कि स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु शस्त्र उठाया जा सकता है, कि दास होने की अपेक्षा स्वतंत्र होकर मरना अधिक श्रेयकर है। कर्नल जार्ज वांशिगटन को विद्रोही सेना का मुख्य सेनापति बनाया गया। इधर 23 अगस्त 1775 में जार्ज तृतीय ने अमेरिकी उपनिवेशों को विद्रोही घोषित कर दिया। इसी समय टामस पेन की पुस्तक 'कामनसेन्स' बाजार में आई, जिसमें इंग्लैण्ड की कठोर शब्दों में आलोचना थी तथा उपनिवेशों के प्रति कठोर व्यवहार के लिए संसद की अपेक्षा जार्ज तृतीय के कुटिल व्यक्तित्व को उत्तरदायी ठहराया। 50 पृष्ठ की इस पुस्तिका की लगभग 5 लाख प्रतियां हाथों-हाथ बिक गई। इसके प्रकाशन के बाद इंग्लैण्ड से युद्ध करने में संकोच करने वाले भी अपने विचारों को बदलने को बाध्य हो गए।

तृतीय महाद्वीपीय सम्मेलन:

जून 1776 में उपनिवेशों का तीसरा सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें 4 जुलाई को न्यूयार्क को छोड़कर सभी उपनिवेशों की सहमति से स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी गई। न्यूयार्क इस घोषणा में 15 जुलाई को शामिल हुआ। स्वतन्त्रता की घोषणा में कहा गया कि मुक्ति और स्वतन्त्रता उपनिवेशों का अधिकार है। सत्ताईस शीर्षकों में अमेरिकी स्वतन्त्रता के हनन की कहानी कहते हुए दार्शनिक जॉन लॉक के "प्राकृतिक अधिकार" सिद्धांत को स्वतन्त्रता की घोषणा का आधार बताया। इस घोषणा-पत्र के अनुसार" द्रद्र जन्म से सभी मनुष्य समान हैं और सृष्टिकर्त्ता ने उन्हें कुछ अहरणीय अधिकार दिए हैं, जिनमें प्रमुख हैं-जीवन, स्वाधीनता और

सुख का अनुभव। इन्हीं अधिकारों कीं प्राप्ति के लक्ष्य से जन समूहों में शासन की योजना बनाई जाती है तथा शासकों को शासितों की ही अनुमति से अधिकार प्रदान होते हैं।" घोषणा पत्र में उन सभी घटनाओं व परिस्थितियों का विवरण दिया गया जो जार्ज तृतीय की नीति को अंवाछनीय सिद्ध करे। ईश्वर द्वारा प्रदत्त जीवन स्वतन्त्रता और सुख के स्थायी अधिकारों का हनन करने वाली सरकार को समाप्त करके या बदलना लाजमी है, इस बात की घोषणा के साथ अमेरिका का इंग्लैण्ड से सम्बन्ध विच्छेद हो गया और स्वतन्त्रता संग्राम प्रारम्भ हो गया।

युद्ध का स्वरूप

उपनिवेशों को सैन्य शक्ति से दबा देने के निश्चत से जार्ज तृतीय ने नई सेना की भर्ती की। जब इसके लिए उसे अधिक व्यक्ति न मिले तो उसने हैस, अलहाट और ब्रंसविक से 20 ,000 जर्मन सैनिक भाड़े में लिए। संसार की सबसे बड़ी ताकत इंग्लैण्ड का अनुभवहीन अमेरिकी सेनापति और अल्प-प्रशिक्षित सैनिकों से युद्ध आरम्भ हुआ, जो 6 वर्ष तक चला।

आरम्भ में वाशिगटन ने अंग्रेज सेना को बोस्टन से भगा दिया, पर जब वह न्यूयार्क के महत्वपूर्ण स्थान पर अधिकार करने पुन: अग्रेजी सेना का मुकाबले आया तो उसकी हार पर हार होने लगी और उसे अंग्रेज सेना ने न्यूजर्सी की और भगा दिया। 1776 के अन्त में अपूर्व युद्ध कौशल का परिचय देते हुए वाशिंगटन ने ट्रेण्टन के युद्ध में ब्रिटिश सेना को परास्त किया। इसके बाद प्रिन्सटन के युद्ध में अंग्रेज फिर हारे। लेकिन 1777 के आरम्भ में फिर अमेरिकीयों की स्थिति संकटमय हो गई। अंग्रेज जनरल 'हो' की सेनाएं न्यूयार्क से समुद्र के रास्ते फिलाडेलिफिया पहुंच कर अमेरिका की नई राजधानी पर कब्जा कर लिया। कांग्रेस के सदस्य भाग खड़े हुए। वाशिंगटन व उसके सैनिकों को शहर के बाहर जंगल में जाड़े में दिन गुजारने पड़े। यह माना जाता है कि जनरल हो की राजनीतिक सहानुभूति अमेरिकी लोगों के साथ थी 'अन्यथा वह इस समय अपना आक्रमण जारी रखते हुए अमेरिका को पूरी तरह से कुचल सकता था।

1777 का अक्टूबर माह अमेरिका के लिए शुभ साबित हुआ। इंग्लैण्ड ने न्यूयार्क पर कब्जा जमाकर अमेरिका को दो भागो में बांटने की योजना बनाई, जिसके लिए न्यूयार्क पर एक साथ तीन दिशाओं से आक्रमण करना था- जनरल जॉन-बरगोइन को कनाडा से दक्षिण को, जनरल हो को न्यूयार्क से उतर को और जनरल सैन्ट लेजर को पूर्व को बढ़ना था और न्यूयार्क से 150 मील दूर उत्तर को हड़सन नदी की घाटी में अल्बोनी नामक स्थान पर तीनों को मिलना था। लेकिन यह योजना बुरी तरह से असफल हुई। सैन्ट लेजर की सेना को पश्चिमी वनों में अमेरिकनों ने रोके रखना, हो की सेना पहुंची ही नहीं। जनरल बरगोइन अपने 6000 सैनिकों के साथ सितम्बर मध्य तक अन्य सैनाओं की प्रतीक्षा करता रहा। बेनेर्डक्ट आर्नल्ड के नेतृत्व में लगभग 20,000 अमेरिकी किसानों व सैनिकों ने बरगोइन को सारा टोपा की ओर खदेड़ कर घेर लिया। 17 अक्टूबर 1777 को मजबूरन बरगोइन को आत्मसर्म करना पड़ा। 'सारा टोगा की हार ने इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा। अमेरिका के पक्ष में फ्रांस व स्पेन हो गए। इसके पहले भी बेंजामिन फ्रैकलिन की अपील पर इन देशों ने अमेरिका को युद्ध सामग्री भेजी थी ओर फ्रांस के माकुई-द-लफायत, जर्मनी के बैरन फान स्टम यूबन और बैरन फान

कल्ब तथा पोलैण्ड के काम-काम फलास्की जैसे दक्ष सैन्य अधिकारियों ने अपनी सेनाएं भेट की थी। सारा टोगा के युद्ध बाद 6 फरवरी को फ्रांस व स्पेन दोनों ने अमेरिका से सन्धि कर ली। इससे युद्ध में तेजी आ गई। इधर नवम्बर 1777 में इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री लॉर्डनार्थ ने यह निश्चय कर चुका था कि वह कर समाप्त करके अमेरिकों को सन्तुष्ट करने के लिए कानून पास कराएगा। परन्तु 17 फरवरी 1778 तक संसद का अधिवेशन न हो सकने के कारण दुर्भाग्य से उसके विचार फलीभूत न हो सके।

फ्रांस व स्पेन द्वारा अमेरिका का साथ देने से पश्चिमी द्वीप समूह युद्ध का दूसरा क्षेम बन गया। अन्तिम लड़ाई वर्जिनिया के यार्क टाउन के स्थान पर हुई। फ्रांसीसी बेड़े की सहायता से वाशिंगटन के 15,000 सैनिकों ने लार्ड कार्नवालिस के 8,000 सैनिकों को चारों तरफ से घेर लिया। घेरे तोड़ने के जब सभी प्रयत्न निकल रहे तो उसने 18 अक्टूबर 1781 में आत्म-समर्पण कर दिया। मार्च 1782 में अंग्रेजी संसद ने युद्ध रोकने का प्रस्ताव पारित कर लार्ड नार्थ को इसकी विफलता का उत्तरदायी ठहराया।

पैरिस की सन्धि:

युद्ध समाप्ति के बाद इंग्लैण्ड व अमेरिका दोनों शान्ति वार्ता हेतु उत्सुक थे लेकिन फ्रांस व स्पेन इसके निरूद्ध थे, वे इंग्लैण्ड से कुछ और भूमि हथियाना चाहते थे। 1782 तक अमेरिका प्रतिक्षा करते रहा। दरअसल फ्रांस न्यूफाउन्डलैण्ड के समीप मछली पकड़ने का अधिकार चाहता था और स्पेन को अल्वेनी पर्वत मालाओं और मिसिसीपी के मध्य का प्रदेश दिलाना चाहता था। यह बात न ही अमेरिका और न इंग्लैण्ड चाहते थे, नतीजन दोनों ने सीधे वार्तालाप करना आरम्भ किया। इससे घबराते हुए फ्रांस ने अप्रैल 1782 में शान्ति वार्ता की स्वीकृति प्रदान की। अमेरिका का प्रतिनिधि था बेन्जार्मन फ्रेंकार्लन और इंग्लैण्ड का प्रतिनिधि रिचर्ड ओस्बाल्ड। लम्बी वार्तालाप के बाद 3 दिसम्बर 1782 में पैरिस की सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। इस सन्धि द्वारा इंग्लैण्ड ने अमेरिका की स्वतन्त्रता स्वीकार ली और उसकी सीमाएं स्पष्ट कर दी गई। इंग्लैण्ड ने फ्रांस को सेनेगल और टोबेगो लौटा दिया, न्यूफाउण्डलैण्ड के निकट मछली पकड़ने का अधिकार भी दे दिया। स्पेन को भूमध्य सागर में मिनोर्का टापू और अमेरिका में फ्लोरिडा प्राय: द्वीप दे दिया गया। अमेरिका ने इस बात को स्वीकारा कि वह इंग्लैण्ड के व्यापारियों को वहां से अपने रूपए वसूलने से कानूनन हीं रोकेगा और जब्त करी सम्पत्ति वापस लौटा देगा।

अंग्रेजों की पराजय के कारण

अंग्रेजों की पराजय के कई कारण थे। यह बात जरूर है कि इंग्लैण्ड सामुद्रिक शक्ति में संसार में श्रेष्ठ था, लेकिन प्रशांत महासागर पार कर समय पर पर्याप्त सेना व सारा समान पहुंचाना कठिन कार्य था। फिर, उपनिवेशों में अग्रेंजी सेना- में जो ढाई लाख सैनिक थे उनमें एक लाख से अधिक कभी उपस्थित नहीं हुए। दरअसल, इंग्लैण्ड ने कभी भी युद्ध की व्यापकता को समुचित महत्व नहीं दिया। सैन्य संख्या की दृष्टि में अमेरिका की 1/3 जनसंख्या लड़ रही थी तो क्षेत्र में अमेरिका का विशाल तट था जहां अग्रेजी नौसेना प्रभावहीन हो गई थी। अग्रेजी सेना स्थलयुद्ध में बहुत कुशल नहीं थी। अनुभवी होने के बावजूद अंग्रेजी सेनापतियों में परस्पर

फूट व ईर्ष्या हार का कारण थी। इस युद्ध के पक्ष में व्हिग दल नहीं था अत: व्हिग सेनापति पूरे उत्साह से नहीं लड़ रहे थे। अन्त में, इंग्लैण्ड के व्यापारी अपने व्यापार हेतु सरकार पर सन्धि के लिए निरंतर दबाव डाल रहे थे। वे जानते थे कि अमेरीकी स्वतन्त्र होकर भी इंगलैण्ड के साथ व्यापार करते रहेगें तो उन्हें हानि नहीं होगी। ये सब वो कारण थे जिनकी वजह से इंग्लैण्ड को पराजय का सामना करना पड़ा।

19.9 स्वतंन्त्रता संग्राम का परिणाम:-

अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम न सिर्फ प्रशान्त महासागरीय जगत वरन् सम्पूर्ण जगत की महत्वपूर्ण घटना थी। उसके महत्वपूर्ण परिणाम हुए।

सर्वप्रथम, अमेरिका एक स्वतन्त्रता राष्ट्र बना, जो योरोपीय शक्तियों के चंगुल से पूर्णतया स्वतंत्र बन गया। पहले ही 1763 में सप्त वर्षीय युद्ध के उपरांत फ्रांस अमेरिका से दूर हो गया था। इस संग्राम में इंग्लैण्ड और कालांतर में 1780 में अमेरिकावासियों ने स्पेन के विरूद्ध विद्रोह कर स्पेन के प्रभुत्वा वाले उपनिवेशों को भी स्वतन्त्र करा लिया।

यूं स्वतन्त्रता संग्राम की समाप्ति होने पर अमेरिकी राज्यों के आपसी मतभेद उभरने लगे थे। सभी तेरह उपनिवेशों ने अपने को स्वतन्त्र घोषित कर अपने-अपने संविधान बना लिए थे। 1707 मई में सभी राज्यों का सम्मेलन आयोजित किया गया ताकि संघीय संविधान बनाया जाए। जॉर्ज वाशिंग्टन इसके अध्यक्ष बने। अधिकांश विषयों पर विवाद होने के कारण 17 सितम्बर 1787 में एक छोटा सा संविधान बना- जिसे लागू होने के लिए 9 राज्यों की सहमति आवश्यक थी। नागरिकों के मौलिक अधिकार, धर्म, भाषा, प्रेस की स्वतन्त्रता, मिलिशिया रखने का अधिकार, न्यायालय में जूरी द्वारा सुनवाई के अधिकार और बिना नाम के वारंट आदि से सम्बद्ध 10 संशोधन जोड़ने के बाद सभी राज्य संविधान पर सहमत हो गए। फलत: मार्च 1789 को नयी सरकार स्थापित हुई जिसका प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंग्टन बना।

अमेरिका पहला प्रजातान्त्रिक राज्य था जिसने धर्म को राज्य से सर्वथा अलग रखा और धर्म को मनुष्य का व्यक्तिगत कार्य समझा। धर्म का प्रशासन व राज्य से तनिक भी सम्बन्ध नहीं रखा गया। स्वतन्त्र होते ही अमेरिका के गृह उद्योग धन्धों में विकास होना आरम्भ हुआ और अमेरिका औद्योगिक विकास में विश्व का एक महान राष्ट्र बन गया।

इंग्लैण्ड के हाथों अमेरिकी उपनिवेशों के निकल जाने से जहां एक साम्राज्यवादी देश के रूप में इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को धक्का लगा वहीं सिद्धांत के रूप में वाणिज्यवाद पर भी लोगों की आस्था न रही। इंग्लैण्ड ने इस नीति को त्याग दिया और अन्य बस्तियों को बचाने हेतु अपनी उपनिवेशीय नीति में परिवर्तन किया। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल' (ब्रिटिश कामनवैल्थ ऑफ नेशन) नई नीति थी जो अधिक उदार तथा उपनिवेशवासियों के लिए हितकर थी।

स्वतन्त्रता संघर्ष के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में जार्ज तृतीय के व्यक्तिगत शासन का अन्त हो गया। प्रधानमन्त्री लॉर्ड नार्थ को अपना पद छोड़ना पड़ा। राजा की शक्तियों पर अकुंश लग गया, 'केबिनेट' की शक्ति पुन: स्थापित हुई और ब्रिटिश संविधानव की रक्षा हुई।

इस संग्राम से सबसे अधिक फ्रांस प्रभावित हुआ। फ्रांस के सैनिकों व स्वयं से वकों ने अमेरिका की आजादी की लड़ाई जीत कर वापस अपने देश में क्रान्ति के अवसर पर क्रान्ति को

सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम ने फ्रांसीसी क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

19.10 सारांश

अमेरिका का स्वतन्त्रता संग्राम विश्व की एक महान घटना थी। अक्सर इसे अमेरिकी क्रान्ति के नाम से भी संबोधित किया जाता है। कई विद्वानों को इसमें क्रान्ति के सभी लक्षण दिखाई देते हैं। जैसे रिचर्ड बी मोरिस को लें, उनके अनुसार वर्तमान के सभी उदीयमान राष्ट्र संस्कारवश या रूप में अमेरिकी क्रान्ति को नमन करते हैं क्योंकि अमेरिकी क्रान्ति ने उन्हें स्वतन्त्रता का रास्ता दिखाया। अमेरिकी क्रान्ति पहला "राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम" था, सारागोटा व यार्क टाउन जैसे युद्ध के अलावा इस क्रान्ति में गुरिल्ला युद्ध पद्धति के समान अमेरिकी क्रांति भी एक जन आन्दोलन था। दरअसल, स्वतन्त्रता संग्राम के स्वरूप पर विभिन्न मत हमें मिलते हैं। इसे परिवर्तन विरोधी तथा निवारक आन्दोलन मात्र ही माना गया। सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति के बाद यह युद्ध स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए किया गया था। इसी प्रकार जार्ज बानक्रोफ्ट के अनुसार यह एक ऐसी क्रान्ति थी जिसकी सफलता इतनी सुखद शान्ति के साथ पा ली गई कि रूढ़िवादी भी इसकी निन्दा करने-में हिचकते हैं।

देखा जाय तो इंग्लैण्ड के आधिपत्य से मुक्ति हेतु अमेरिकी उपनिवेशों का संघर्ष इतिहास के अन्य संघर्षो से भिन्न था। न यह गरीबी के कारण उत्पन्न असंतोष का परिणाम था न यहां के लोग सामन्ती व्यवस्था से पीड़ित थे। उपनिवेशों ने तो, जैसा फ्रेडरिक गेटे ने बताया, केवल अंग्रेजों द्वारा उने स्वीकृत अधिकारों पर किए जाने वाले अतिक्रमण के विरूद्ध संधर्ष ही किया।

अक्सर स्वतन्त्रता संग्राम को सम्राट जार्ज तृतीय का निजी युद्ध कहा जाता है। 'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं" को भी एक प्रमुख कारण गिनाया गया है। इस सम्बन्ध में हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि ब्रिटिश संसद ने बिना प्रतिनिधित्व के उपनिवेशन के आरम्भ से ही कर लगाए हैं। फिर 1763 के बाद जो भी नए कर लगाए गए थे, वे वापस ले लिए गए थे, सिवा चाय के। इसी सम्बन्ध में कालैण्डर का निष्कर्ष महत्वपूर्ण है, जिसके अनुसार अमेरिका को किसी भी तरह के कर पर-औपनिवेशिक व साम्राज्य-मनोवैज्ञानिक चिढ़ थी। यह मानसिकता महत्वपूर्ण है। अमेरिका का इंग्लैण्ड के प्रति कोई प्रेम या लगाव न था। अमेरिका में बसने वालों ने बिना किसी बाहरी सहायता या हस्तक्षेप के अपना भाग्य खुद बनाया था, वे यह स्थिति बरकरार रखना चाहते थे। जहां तक जार्ज तृतीय के निजी युद्ध या कर सम्बन्धी विचार है इस पर बियर्ड से सहमत होना आवश्यक है "जार्ज तृतीय की गद्दी में बैठने और ग्रिनवेल के सत्ता सम्हालने के काफी पहले से ही हजारों अमेरिकी का ब्रिटिश आर्थिक साम्राज्यवाद के साथ संघर्ष हुआ था और 18 वीं शताब्दी के मध्य तक फ्रेंकलिन जैसे दूरदर्शी ने संघर्ष का सार खोज लिया था।" स्वतन्त्रता को वांछनीय बनाने वाली मानसिकता का विकास एक लम्बी प्रक्रिया थी, जैसा जॉन एडम्स ने कहा, "युद्ध आरम्भ होने के पूर्व ही क्रान्ति आरम्भ हो गई, जनता के दिलो-दिमाग में"

19.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

(i) अमेरिका की खोज एवं अमेरिका के उपनिवेशन पर प्रकाश डालते हुए उपनिवेशन की प्रकृति का विश्लेषण कीजिए।

(ii) वाणिज्यवाद की व्याख्या करते हुए अमेरिका में वाणिज्यवाद के स्वरूप की व्याख्या कीजिये।

(iii) अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का विवरण दीजिये।

(iv) अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के परिणामों की व्याख्या कीजिये।

19.12 संदर्भ ग्रन्थ:

1. बनारसी दास सक्सेना: **अमेरिका का इतिहास**
2. हैरोल्ड अंडरउउ फॉडल क् नेर: **अमेरिकन इकोनोमिक हिस्ट्री**
3. सी० एण्ड एम० बियर्ड: **राईज ऑफ अमेरिका सिविलाईजेशन**
4. जी० एस० कालेण्डर: **सेलेक्शन्स फ्रांम द इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स**
5. रिचर्ड बी० मोरिस: **द इमर्जिग नेशन्स एण्ड द् अमेरिकन रिवोल्यूशन**

इकाई-20
अमेरिकी क्रान्ति का महत्व

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 अमेरिका के इतिहास के सन्दर्भ में महत्व

20.2.1 राजनीतिक क्षेत्र में

20.2.2 आर्थिक क्षेत्र में

20.2.3 कृषि क्षेत्र में

20.2.4 नौ परिवहन क्षेत्र में

20.2.5 सामाजिक क्षेत्र में

20.3 विश्व इतिहास के परिप्रेक्ष्य में महत्व

20.3.1 विचारधारा के रूप में

20.3.2 इंग्लैण्ड पर प्रभाव

20.3.3 फ्रांस पर प्रभाव

20.3.4 आयरलैण्ड पर प्रभाव

20.3.5 भारत पर प्रभाव

20.4 सारांश

20.5 शब्दावली

20.6 बोध प्रश्न

20.7 सन्दर्भ ग्रंथ

20.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपको अमेरिका की क्रांति के महत्व से अवगत कराया जाएगा। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप:

एक राष्ट्र के रूप में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के आविर्भाव के महत्व को जान सकेंगे;

इस घटना का विश्लेषण खण्डों में विभक्त करके नहीं समग्र रूप में करने के महत्व से परिचित हो सकेंगे;

इंग्लैण्ड 'को भारी वाणिज्यिक क्षति, फ्रांस में लोकतन्त्र का शुभारम्भ जैसे तथ्यों से परिचित हो सकेंगे; और

संविधानवाद, संघवाद एवं गणतन्त्रवाद के राजनीतिक विचारों को शक्ति प्राप्त करने सम्बन्धी तथ्य का विश्लेषण कर सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना

1492 ई० में कोलम्बस द्वारा एक अज्ञात संसार की खोज स्वयं में ही एक अभूतपूर्व घटना थी। अठारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध में इस देश की स्थिति में परिवर्तन आ गया

और वह इंग्लैण्ड की अधीनता से मुक्त होकर एक नव राष्ट्र के रूप में दुनिया के सामने उभर कर आया। 1775 से 1783 के मध्य घटित घटनाओं और जन्मे विचारों ने अमेरिकन क्रान्ति को विशिष्ट दर्जा प्रदान किया। वस्तुत: यह संघर्ष न तो घोर गरीबी के कारण उत्पन्न असंतोष का परिणाम था और न सामन्ती व्यवस्था से उत्पन्न अत्याचारों के विरूद्ध एकजुट होने का परिणाम था। वस्तुत: यह शानदार संघर्ष अमेरिकी उपनिवेशों द्वारा इंग्लैण्ड की इच्छा के विरूद्ध स्वतन्त्रता कायम करने के लिए तथा इंग्लैण्ड द्वारा अपनाई गई कठोर औपनिवेशिक नीति के विरूद्ध था। इस प्रकार अमेरिका का स्वातन्त्र्य संघर्ष अनूठा था।

निःसन्देह 'वंशानुगत कुलीनतन्त्र को समाप्त करके गणतन्त्र की स्थापना करने वाला संयुक्त राज्य अमेरिका प्रथम देश था। 'अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम ने दुनिया के सामने यह विचार प्रस्तुत किया कि राष्ट्रीय जागरण हो जाने के उपरान्त उपनिवेशों को कोई भी सरकार अपने अधीन नहीं रख सकती। इस स्वातन्त्र्य संग्राम को 'बीसवीं शताब्दी में भी विश्व में महान् परिवर्तन लाने वाला माना जाता है।'

20.2 अमेरिका के इतिहास के सन्दर्भ में महत्व-

स्वतन्त्रता की उद्घोषणा के समाचार पर फिलाडेल्फिया, बोस्टन तथा अन्य स्थानों पर आनन्द व्यक्त करने, बन्दूक तथा तोपें दागने और गिरिजाघरों में घण्टियाँ बजाने के लिए भीड़ एकत्र हुई किंतु अमेरिका में अनेक लोग थे जिन्होंने खुशियाँ नहीं मनाई। इस कथन के बावजूद अमेरिका के इतिहास में अमेरिकन क्रान्ति का महत्व कम नहीं हो जाता है। कतिपय विद्वानों ने क्रान्ति को माँगों के सन्दर्भ में रूढ़िवादी एवं सुरक्षात्मक बताया। इसके अतिरिक्त जार्ज बानफ्रोस्ट की यह टिप्पणी, जो उन्होंने अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री आफ द यूनाइटेड स्टेट्स में की है, स्वीकार्य नहीं होने के बावजूद विचारणीय है; यह तो एक ऐसी क्रान्ति थी जिसकी सफलता इतनी सुखद-शान्ति के साथ प्राप्त कर ली गई कि परिवर्तन विरोधी भी इसकी निन्दा करने में हिचके।' जे0 एफ0 जेमसन, फ्रेडरिक जेनटेन जैसे प्रभृत विद्वानों के विचारों से यह आभास मिलता है कि अमेरिका के क्रान्ति से अमेरिका में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। परन्तु अमेरिकन क्रान्ति में तेरह अमेरिकन उपनिवेशों में जो संघर्ष का बिगुल बजाया उसका प्रभाव अमेरिका सहित विश्व भर में दूरगामी रहा। इस संघर्ष ने एक स्वतन्त्र राष्ट्र की स्थापना की तथा अमेरिका की औद्योगिक एवं आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। इतना ही नहीं इस संघर्ष के फलस्वरूप लक्षित हुए सामाजिक प्रभावों को देखकर ही तो कतिपय इतिहासकारों ने इसे सामाजिक आन्दोलन ही माना है।

20.2.1 राजनीतिक क्षेत्र:-

क्रान्ति ने संयुक्त राज्य अमेरिका के राजनीतिक जीवन में नया मोड़ दिया। इस संघर्ष का महत्व इस तथ्य में निहित है कि अमेरिका एक स्वतन्त्र एवं सम्प्रभु राष्ट्र बन गया। इंग्लैण्ड की सरकार ने उसकी स्वतन्त्रता को मान्यता प्रदान कर दी । क्रान्ति के द्वारा वंशानुगत कुलीनतन्त्र को समाप्त करके गणतन्त्र की स्थापना करने वाला देश बन गया। यह कहना गलत न होगा कि यदि इंग्लैण्ड की क्रान्ति ने प्रतिनिधि सत्तात्मक प्रथा को जन्म दिया, तो अमेरिकी

क्रान्ति ने जन्तन्त्रात्मक प्रथा को जन्म दिया, जिसमें पहली बार सर्वसाधारण को मताधिकार प्राप्त हुआ। संघीय शासन व्यवस्था, लिखित संविधान एवं धर्मनिरपेक्षता का प्रयोग अमेरिका की भूमि रूपी प्रयोगशाला में जिस सफलता के साथ हुआ उसने अमेरिका की क्रान्ति के महत्व में पर्याप्त इजाफा किया।

20.2.2 आर्थिक क्षेत्र-

अमेरिकन क्रान्ति के आर्थिक परिणाम भी इसके राजनीतिक परिणामों की भाँति अत्यधिक महत्वपूर्ण रहे। आर्थिक क्षेत्र में क्रान्ति ने मूलत: पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के मार्ग की सभी बाधाओं को समाप्त करके इसके विकास को प्रोत्साहित किया। पुरातन व्यवस्था तथा इससे सम्बन्धित रीति-रिवाज की समाप्ति से अमेरिकी उपनिवेशों में पूँजीवाद के विकास को बल मिला। क्रान्ति से अमेरिका के उद्योग दो तरह से लाभान्वित हुए-प्रथम, अमेरिकी उद्योग अंग्रेजों द्वारा लगाये गये व्यापारवादी प्रतिबन्धों से मुक्त हो गये, द्वितीय युद्धकाल में इंग्लैण्ड की वस्तुओं का आयात बन्द हो जाने के कारण उपनिवेशों के उद्योग को विकास का अवसर मिला। ब्रिटेन से ऊनी वस्त्र के आयात बन्द हो जाने से देशी वस्त्रों की माँग बहुत बढ़ गयी। सूत कातने और वस्त्र बुनने का कार्य राष्ट्रीय स्तर पर घर-घर किया जाने लगा। औद्योगिक विकास ने अमेरिका की आर्थिक दशा में सुधार कर आज उसे पिरामिडनुमा संरचना में उच्चतम शिखर पर आसीन कर दिया हैं।

20.2.3 कृषि के क्षेत्र में

अमेरिकी क्रान्ति का उसकी कृषि दशा पर बहुत प्रभाव पड़ा। क्रान्तिकाल में बड़े-बड़े भूमिपति उपनिवेशों को छोड़कर कनाडा आदि देशों को चले गये जिससे उनकी बड़ी-बड़ी भू-सम्पदाओं को तोड़कर छोटे-छोटे टुकड़ों में इनका वितरण निम्न एवं मध्यम वर्गो के हाथों में किया गया। क्रान्ति के सन्दर्भ में एक विद्वान की टिप्पणी है कि, "यदि समग्र रूप से देखा जाये तो अद्यतन अमेरिका की कृषि को लाभ ही हुआ हानि नहीं। साथ ही युद्ध काल में आये विदेशियों से यूरोप में कृषि सुधारों के सम्बन्ध में अमेरिका को नई जानकारी प्राप्त हुई।"

20.2.4 नौ परिवहन क्षेत्र में-

क्रान्ति ने अमेरिकन नौ-परिवहन को एक सशकत आधार प्रदान किया। शेष संसार के लिए अमेरिका के बन्दरगाह खोल दिये गये। इससे फ्रांस, स्पेन तथा हॉलैण्ड आदि के साथ अमेरिका के व्यापार में काफी वृद्धि हुई। इन देशों से विलासिता की वस्तुओं का आयात किया जाने लगा। इसके अतिरिक्त क्रान्ति का महत्व नौ-परिवहन व्यवस्था में सुधार के सन्दर्भ में गौर-तलब है। व्यक्तिगत कम्पनियाँ आगे आयीं और विश्व नौ-परिवहन से जुड़कर संसार में अमेरिका का नाम करने लगी।

20.2.5 सामाजिक क्षेत्र में-

अमेरिका के इस संग्राम से अमेरिकन समाज उद्वेलित हुआ। इस संघर्ष में स्त्रियों अपना महान् योगदान दिया। संघर्ष के समय उन्होंने गुप्तचरों का काम किया, शास्त्रो के निर्माण में सहयोग दिया, युद्ध के समय अपने सम्बन्धियों को रसद पहुँचाने का कार्य उन्होंने किया। इसीलिए अमेरिका की औरतों की इस भागीदारी की ओर यदि अंग्रेज सेनानायक कार्नवालिस का ध्यान आकृष्ट हुआ तो इसमें आश्चर्य नहीं है। उसकी टिप्पणी है कि 'यदि हम लोग उतरी अमेरिका के सभी पुरुषों को खत्म भी कर दें तो औरतों को जीतने के लिए हमें काफी लड़ना पड़ेगा।' इस संघर्ष की सफलता के उपरांत के उत्तराधिकार नियम में भी परिवर्तन किया गया। इस परिवर्तन के फलस्वरूप मृत जमींदार की सम्पति अब केवल ज्येष्ठ पुत्र को ही न दी जाकर उसके समस्त परिवार के सदस्यों में विभकत की जाने लगी। भागीदारों में जमींदार की पुत्रियां भी सम्मिलित होती थीं।

यह सोचना तथ्यों से परे होगा कि सर्वसाधारण ने संग्राम को उपेक्षा की दृष्टि से देखा। किंतु यह भी सत्य है कि जनसाधारण को मताधिकार, से वंचित रखा गया। स्त्रियों, नीग्रो तथा बहुत से श्वेतों को भी मताधिकार नहीं मिला। यह बात भी विचारणीय है कि संग्राम का पथ प्रदर्शन जनसाधारण ने नहीं अपितु मध्यम वर्ग ने किया था। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि स्वतन्त्रता के घोषणा पत्र पर जितने लोगों ने हस्ताक्षर किये थे, उनमें अधिकांश लोग मध्यम वर्ग के थे। परन्तु इस सबके बावजूद अमेरिका की 1776 की क्रान्ति का महत्व सामाजिक क्षेत्र में कम नहीं हो जाता। इसने जन-साधारण को सुखमय जीवन का लक्ष्य बोध प्राप्त करने की प्रेरणा देकर इतिहास में स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया।

अब पहले से अधिक शिक्षा का महत्व अमेरिकन समाज ने समझा। यह तत्काल अनुभव किया गया कि प्रजातन्त्रीय स्वराज्य में शिक्षित मतदाताओं का होना आवश्यक है। जेफरसन ने लिखा, "मैं आशा करता हूँ कि सब चीजों से अधिक प्राथमिकता जनसाधारण की शिक्षा को दी जायेगी क्योंकि यह सिद्ध है कि जनता की सुबुद्धि पर ही स्वाधीनता के उचित स्तर को सुरक्षित रखना निर्भर है। "अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा कहे गये ये वाक्य आज भी प्रांसगिक हैं और भारत को अपनी स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाने के लिए देशवासियों को सुरक्षित करने में कोई कसर बाकी नहीं रखनी चाहिए।

20.3 विश्व इतिहास के परिप्रेक्ष्य में महत्व-

अमेरिका की क्रान्ति की सफलता ने अपना विश्वव्यापी प्रभाव स्थापित किया। अमेरिका स्वातन्त्र्य युद्ध की वास्तविक महत्ता न तो स्पेन या फ्रांस के प्रादेशिक लाभों, न हॉलैण्ड की व्यापारिक क्षतियों तथा इंग्लैण्ड के साम्राज्य की अवनति में ही थी, वरन् इसकी वास्तविक महत्ता अमेरिकी क्रान्ति के सफल सम्पादन में पाई जाती है। आधुनिक मानव प्रगति में अमेरिका की क्रान्ति एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जा सकता है। 'नव युग का प्रभात' 'नव युग का सन्देश' आदि नामों से इस क्रान्ति को अभीहित किया गया है। परन्तु कुछ विद्वानों ने इसके महत्व को बढ़-चढ़कर आंकने से आगाह किया है। इतिहासकार चार्ल्स एबियर्ड, फ्रेडरिक जेनटेन, जार्ज बानफ्रोस्ट तथा इंग्लैण्ड का महान् राजनेता तथा वक्ता एडमंड बर्क इनमें शामिल हैं। यह तथ्य स्मरणीय है

कि 1787 में संविधान के निर्माण हेतु फिलाडेल्फिया सममेलन में एकत्र 45 सदस्यों में से अधिकांश सदस्य केवल सरकार की सुरक्षा, गुलामों के व्यापार एवं भूमि में अभिरूचि रखते थे। उन्हें स्वतन्त्रता से विशेष प्रयोज्य नहीं था। परन्तु यह महत्वपूर्ण नहीं है कि लोग क्या सोच रहे थे; महत्वपूर्ण तो यह है कि परिणाम ही घटना को महत्व की आधारशिला प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से अमेरिका क्रान्ति विश्व इतिहास की एक अत्यंत ही उल्लेखनीय घटना थी।

20.3.1 विचारधारा के रूप में-

इस क्रान्ति की गौरवपूर्ण सफलता ने राजतन्त्र के दैवी अधिकार सिद्धान्त तथा कुलीन वर्गो के विशेषाधिकारों को गहरा आघात पहुँचाया। अमेरिकी क्रान्ति ने रक्तहीन क्रान्ति को न्यायसंगत रूप से गौरवान्वित किया और इन सिद्धान्तों की उत्कृष्टता को प्रमाणित कर दिया। इसने संसदीय लोकतान्त्रिक प्रणाली की महिमा को प्रतिष्ठित किया तथा लोकप्रिय प्रभुसत्ता तथा राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धान्तों की पुष्टि की। इस क्रान्ति ने स्वतन्त्रता व समानता के विचारों के लिए नये दायरे खोल दिये। स्वतन्त्रता संग्राम की सफलता के उपरान्त 'अमेरिका मानवता की आशा तथा स्वतन्त्रता का आश्रय-स्थल' बन गया। अमेरिका के घोषणा-पत्र ने जब यह स्पष्ट कर दिया कि सब मनुष्य समान हैं, सरकार उनकी अनुमति से ही निर्मित होनी चाहिए तो विश्व के समकालीन एवं भावी दार्शनिकों, विचारकों एवं राजनीतिज्ञों ने धर्म व्यवस्था एवं दैवी-सिद्धान्त पर आधारित सरकार की आलोचना को अपनी लेखनी का अभिन्न अंग बना लिया। यहाँ यह लिखने की अधिक आवश्यकता नहीं है कि विश्व भर में उपनिवेशवादी विरोधी विचारधारा को इस क्रान्ति की सफलता ने बल दिया। इस क्रान्ति ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि वाणिज्यवादी नीति से उपनिवेशों के सिवाय आर्थिक शोषण के और कुछ नहीं हो सकता है।

20.3.2 इंग्लैण्ड पर प्रभाव-

अमेरिकी क्रान्ति का महत्व इस संदर्भ में भी है इसके पश्चात् इंग्लैण्ड ने वाणिज्यवादी नीति का परित्याग कर दिया। उपनिवेशों की स्वतन्त्रता से पूर्व बहुत से लोगों ने सोचा था कि इंग्लैण्ड के व्यापार-वाणिज्य को जबरदस्त धक्का लगेगा, किन्तु जब कुछ ही वर्षो बाद इंग्लैण्ड का व्यापार अधिक होने लगा तो अधिकांश देशों की वाणिज्यवादी नीतियों से आस्था जाती रही।

इंग्लैण्ड में इस क्रान्ति की महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाएँ हुई। असन्तुष्ट राजनीतिज्ञों तथा उदारवादी नेताओं ने प्रशासनिक व्यवस्था एवं नीतियों की कटु आलोचना करना प्रारम्भ कर दिया तथा समुचित समयानुकूल सुधारों की माँग करने लगे। उपनिवेशों के छीन जाने से इंग्लैण्ड को अपनी अन्य बस्तियों को बचाने की चिन्ता सताने लगी। अत: इंग्लैण्ड को उपनिवेशों के प्रति उदासीन नीति का त्याग करना पड़ा। ब्रिटिश संसद ने भारत स्थित ब्रिटिश सरकार के कार्यो के निरीक्षण तथा नियन्त्रण के लिए एक मंडल का प्रावधान किया जिससे ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपने विशेषाधिकारों का दुरूपयोग नहीं कर सके। चार्ल्स जेम्स फॉक्स तथा कनिष्ठ युवापिट जैसे आमूल सुधारों के समर्थकों ने ब्रिटिश संसद के पूर्ण लोकतन्त्रीकरण पर विशेष बल दिया।

20.3.3 फ्रांस पर प्रभाव-

फ्रांस भी क्रान्ति के प्रभाव में आ गया। लाफायत ने अमेरिकी 'क्रान्ति की भावना फ्रांसीसी जनमानस तक पहुँचाई। फ्रांसीसी सैनिकों ने लौटकर देशवासियों को अपने अनुभव सुनाये। अमेरिकी क्रान्ति की सफलता ने फ्रांसीसी जनता में आत्मविश्वास जागृत किया। अमेरिका की क्रान्ति की फ्रांस की क्रान्ति में भूमिका दिदरों, रूसो, वाल्तेयर जैसे विचारकों से कम नहीं थी। इतिहासकार हेज भी इस कथन से सहमत हैं। फ्रांसीसी क्रान्ति के मुख्य सिद्धान्त- स्वतन्त्रता, समानता तथा बन्धुत्व का मूल अमेरिकी संघर्ष में निहित है।

20.3.4 आयरलैण्ड पर प्रभाव-

आयरलैण्ड, जो सदियों से पीसता आ रहा था, ने अमेरिकी क्रान्ति के परिणामों का स्वागत किया। होरेस वालपोल ने इंग्लैण्ड की संसद मे कहा- 'आयरलैण्ड अमेरिका के लिए पागल हो रहा था।' उस समय आयरलैण्ड की जनता भी अपनी आर्थिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए इंग्लैण्ड के विरूद्ध संघर्ष कर रही थी। वे व्यापारिक प्रतिबन्धों का अन्त और स्वतन्त्र पार्लियामेंट की स्थापना करना चाहते थे। अमेरिकी उपनिवेशों की इस मांग ने, 'टैक्स लगाने का अधिकार हमें स्वयं है,' आयरलैण्ड के निवासियों को बहुत अधिक प्रभावित किया।

20.3.5 भारत पर प्रभाव-

भारत पर अमेरिका की क्रान्ति का तत्कालीन प्रभाव प्रतिगामी रहा। अमेरिकी क्रान्ति के दौरान-फ्रांसीसियों में युद्ध की परिस्थिति उत्पन्न हो गई जिससे लाभ उठाकर अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों की शक्ति को भारत में क्षति पहुँचाई तथा अपने साम्राज्य विस्तार के मार्ग को सुलभ बना लिया। किन्तु यह भी सत्य है कि भारत सहित अनेक पराधीन राष्ट्रों की बेड़िया खोलने का मार्ग अमेरिकन क्रान्ति ने प्रशस्त किया।

20.4 सारांश

अमेरिकी क्रान्ति ने नये संसार में नये युग को जन्म दिया और पुराने संसार के लिए भी एक नये युग का मार्ग प्रशस्त किया। प्रजातन्त्र का विकास, दैवी अधिकारों का अन्त, वाणिज्यवादी सिद्धान्तों का पतन, फ्रांसीसी क्रान्ति का शीघ्र अवक्षेपण, शेष दुनिया में आजादी की लड़ाई के लिए प्रेरित करने तथा अमेरिका के एक स्वतन्त्र एवं मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरने के सन्दर्भ में अमेरिकी क्रान्ति के महत्व का मूल्यांकन किया जाना अपेक्षित है। क्रान्ति का महत्व 4 जुलाई, 1776 की घोषणा में निहित है, जिसमें कहा गया था कि 'विश्व का प्रत्येक मानव पूर्णरूपेण स्वतन्त्र है एवं समान है तथा उसे अपनी स्वतन्त्रता, अधिकारों की सुरक्षा के लिए संघर्ष का अधिकार प्राप्त है।' इन्हीं धारणाओं को मूर्तरूप देने में तब से आज तक विश्व प्रयत्नशील है, बाधाएँ तब भी थीं, आज भी हैं और कल भी होंगी, किंतु यह विचारधारा जगत् की हवा में आज भी जीवन्त है।

20.5 शब्दावली

वाणिज्यवाद- यह उस विचारधारा का नाम है जो पश्चिमी यूरोप में सोलहवीं सत्रहवीं एवं अठारहवीं सदी में विद्यमान थी। वाणिज्यवाद ऐसी विचारधारा है जिसका प्रयोग उन नीतियों,

सिद्धान्तों एवं 'व्यवहारों के लिए किया गया जिनके अन्तर्गत राष्ट्र अधिकाधिक सोना-चांदी प्राप्त कर सकें। इस विचारधारा के अन्तर्गत बहुमूल्य धातुओं के अपने देश में आगमन को प्रोत्साहित करने तथा निर्गमन को निरुत्साहित करने, आयातित तथा वस्तुओं की अपेक्षा निर्यातित वस्तुओं के मूल्यों का अधिक निर्धारण आदि का प्रयत्न किया जाता था।

20.6 बोध प्रश्न-

1. अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम का महत्त्व स्पष्ट कीजिये।
2. 'अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम ने अमेरिका के साथ यूरोप का भी रूपान्तरण किया'। टिप्पणी कीजिये।
3. 'अमेरिका' के सन्दर्भ में क्रांतिजनित परिणामों का विवेचन कीजिये।

20.7 सन्दर्भ ग्रंथ

1. जार्ज बानफ्रोस्ट: **हिस्ट्री आफ द यूनाइटेड स्टेट्स**
2. डा. बनारसी प्रसाद सक्सेना: **अमेरिका का इतिहास**
3. डा. वी. एस. माथुर: **अमेरिका का इतिहास**
4. डा. मथुरालाल लाल शर्मा: **नवीन अमेरिका का इतिहास**
5. एच० जी० वेल्स: **वर्ल्ड हिस्ट्री**

इकाई-21
अमेरिकन संविधान का निर्माण

इकाई की रूपरेखा

21.1 प्रस्तावना
21.2 उपनिवेशों की स्थापना
21.3 असंतोष की लहर
21.4 स्वतंत्रता की ओर
21.5 संविधान निर्माण प्रक्रिया
21.6 वर्तमान संविधान की रचना
21.7 संविधान का अनुमोदन
21.8 अभ्यास के प्रश्न
21.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

21.1 प्रस्तावना:

संयुक्त राज्य अमेरिका आधुनिक विश्व का एक महान देश है। यह शक्ति एवं सम्पन्नता- दोनों दृष्टियों से अग्रणी है। इसका इतिहास अधिक पुराना नहीं है, किन्तु यहां का संविधान वर्तमान विश्व के लिखित संविधानों में सबसे पुराना माना जाता है। इस संविधान के अंतर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका ने न केवल अपनी विविधताओं को समरसता और एकजूटता में बदला अपितु वह विश्व की एक महाशक्ति के रूप में उदित हुआ। आधुनिक विश्व पर जहां संयुक्त राज्य अमेरिका की शासन व्यवस्था की छाप सर्वत्र अंकित है, वहाँ उसके साहसिक कार्यो तथा प्रगति के अद्भुत कीर्तिमानों से समूची सभ्यता प्रभावित है।

संयुक्त राज्य अमेरिका की खोज का श्रेय स्पेन निवासी कोलम्बस को दिया जाता है, जिसने अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए दुर्गम समुद्री यात्राएं कर सन् 1492 ई. में पहली बार पश्चिमी हिन्द द्वीपों (West Indies Island) का स्पर्श किया और इस प्रकार अमेरिका के द्वार योरोप के लिये खोल दिये।

21.2 उपनिवेशों की स्थापना:-

एक नये महाद्वीप की खोज के साथ ही योरोप की विभिन्न जातियों ने यहां आकर धीरे-धीरे अपने उपनिवेश बसाना प्रारम्भ कर दिया। इंग्लैण्ड के सम्राट हेनरी सप्तम के आदेश से जॉन केबट ने सन् 1496 ई. में अमेरिका के पूर्वी तट और उत्तर में न्यूफ़ाउण्डलैण्ड की खोज की। स्पेनवासियों ने दक्षिणी अमेरिका तथा पश्चिमी की खोज कर अपनी बस्तियां बसाने की शुरूआत कर दी फ्रांस के निवासियों ने नोवा स्कोशिया, सेण्ट लारेंस नदी, मिसिसिपी नदी, मैक्सिको की खाड़ी आदि की खोज कर वहाँ बस्तियों बसाना प्रारम्भ कर दिया। हालैण्ड के निवासियों ने हडसन तथा डैलबेरा नदी-घाटियों की खोज कर वहां अपने उपनिवेश बसाने प्रारम्भ कर दिये। अंग्रेजों ने अपना पहला उपनिवेश सन् 1607 ई. में जेम्स टाउन (बर्जिनिया) में स्थापित किया। इसके पश्चात् सन् 1620 ई. में धार्मिक नेताओं ने प्लाइमोथ तथा मैसाच्यूसेट्स

नामक उपनिवेश बसाये। सन 1732 ई. तक योरोपीय प्रजातियों द्वारा अमेरिका में विभिन्न उपनिवेश स्थापित करने का काम चलता रहा। इन प्रजातियो के संघर्ष अमेरिका के मूल निवासी रेड इण्डियन से तथा आपस में भी हुए, परन्तु इनमें अंग्रेज विजयी हुए और उन्होंने सन् 1763 ई. तक फैंच तथा अन्य योरोपीय प्रजातियों को पराजित करके कनाडा तथा उत्तरी अमेरिका में अपना प्रभुत्व या अधिकार स्थापित कर लिया। संक्षेप में, सन् 1776 ई. तक अमेरिका में अलग-अलग 13 उपनिवेश अस्तित्व में आ गये, जिनको तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है- (1) सम्राट के उपनिवेश (Royal Colonies) (2) स्वामियों के निजि उपनिवेश (Proprietory Colonies) और (3) अधिकार-पत्र द्वारा प्राप्त उपनिवेश (Charter Colonies)।

प्राय: सभी उपनिवेश आंतरिक मामलों में स्वशासित होते हुए भी इंग्लैण्ड के आधिपत्य में थे। इनकी शासन प्रणाली के स्वरूप की चर्चा करते हुए बर्न्स तथा पैल्टेसन लिखते हैं- "अमेरिका सरकार के आधारभूत तत्वों जिनसे हम आज भी परिचित हैं, की स्थापना औपनिवेशिक काल में की जा चुकी थी। इंग्लैण्ड तथा उपनिवेशों के सम्बंधों ने अमेरिकनों को केन्द्रीय तथा इकाईयों की सरकारों में शक्ति विभाजन के सिद्धान्त से परिचित करवाया और संघवाद को एक प्राकृतिक विकास बनाया। प्रिवी कौंसिल द्वारा अंग्रेजी कानूनों की औपनिवेशिक कानूनों पर प्राथमिकता की स्थापना ने सुप्रीम कोर्ट के उस सिद्धान्त को जन्म दिया जिससे यह निश्चय किया जाता है कि राज्य कार्यो से संविधान अथवा राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन होता है या नहीं। इस काल में शक्ति विभाजन के सिद्धान्त तथा द्विसदनीय विधानमण्डलों का विकास हुआ और आधुनिक अमेरिकन सरकार की जड़े इतनी मजबूत हुई।'

21.3 असंतोष की लहर:-

प्रारम्भ में जब योरोप की विभिन्न प्रजातियां अमेरिकन महाद्वीप के निर्जन भू-भाग पर आकर बसने लगी तो उन्हें अपने अस्तित्व, स्थायित्व, भरण-पोषण, सुरक्षा और नव समाज की संरचना के लिये अनेक कष्ट झेलने पड़े। भावात्मक एकता, भाषा और रहन-सहन की एकरूपता के अभाव में उन्हें हर समय आपसी संघर्ष के लिये तैयार रहना' पड़ता था। फिर भी असुरक्षा और संघर्ष के वातावरण के बीच वे निर्माण और विकास में जुटे रहे। फलस्वरूप उपनिवेशों के निवासियों में शनै: शनै सामाजिक संबंध प्रगाढ़ होने लगे और उनमें राजनीतिक चेतना भी अंकुरित होने लगी। इसका परिणाम यह निकला कि इन उपनिवेशों पर इंग्लैण्ड का आधिपत्य स्थापित होने के बावजूद उन्हें पर्याप्त स्वायतता प्रदान की गई। फिर भी वे ऐसा कोई कानून नहीं बना सकते थे जो इंग्लैण्ड के कानून के विपरीत हो। इनके गवर्नरों की नियुक्ति ब्रिटिश क्राउन द्वारा होती थी। इसके अतिरिक्त उपनिवेशों की विदेश नीति, सेवा और युद्ध तथा आयात-निर्यात करों के विषयों का संचालन भी पूर्णतया ब्रिटिश क्राउन के आधीन था।

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पहुंचने तक प्राय: सभी उपनिवेश काफी सुदृढ़ बन गये थे। उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधर गई थी। उपनिवेशों के बीच व्यापार सम्बंध भी स्थापित हो गये थे, उनमें समान मुद्रा का भी प्रचलन हो गया था तथा आर्थिक दृष्टि से वे ऐसी स्थिति में आ गये थे कि विदेशी आघातों से वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकते थे। ऐसी परिस्थिति में अब

उन्हें इंग्लैण्ड के छोटे-मोटे प्रतिबंध अखरने लग गये। एक ओर अंग्रेज अधिकारियों के विवेकहीन आचरणों से उपनिवेशवासियों की भावनाओं को निरंतर ठेस पहुंचने लगी, दूसरी ओर इंग्लैण्ड की व्यापार और कर सम्बंधी नीति ने उपनिवेशवासियों के असंतोष को चरम सीमा पर पहुंचा दिया।

सन 1756 से 1763 ई. तक इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच चले सप्तवर्षीय युद्ध में इंग्लैण्ड की निर्णायक विजय हुई। इस युद्ध में इंग्लैण्ड की अत्याधिक धनराशि व्यय हुई और उसकी आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो गई। इंग्लैण्ड की सरकार ने यह निश्चय किया कि युद्ध का व्यय वहन करने में अमेरिका के उपनिवेशों को भी भागीदार बनाया जाये। अत: इंग्लैण्ड की सरकार ने अमेरिकन उपनिवेशों की जनता पर अनेक नये कर लगाये तथा ऐसे कानून पारित करना शुरू किया, जिनसे इंग्लैण्ड को आर्थिक लाभ पहुंचे। इंग्लैण्ड के इन तौर तरीकों से उपनिवेशों में असंतोष की लहर फैल गई और ऐसे कदमों का घोर विरोध किया जाने लगा। उपनिवेशी जनता ने करों की अदायगी से स्पष्ट इंकार कर दिया और नारा लगाया कि "ब्रिटिश संसद में उनके प्रतिनिधित्व के बिना कोई कर उन पर नहीं लगाया जा सकता है। (Taxation without representation) इस प्रकार अमेरिका महाद्वीप में एक नये आन्दोलन का जन्म हुआ, जिसमें टामस जैफरसन, जार्ज वाशिंगटन, जान एडम्स, पैट्रिक हेनरी, साम जैसे क्रान्तिकारी नेताओं का भी उदय हुआ। इन नेताओं ने जनता की सरकार विरोधी आवाज को बुलन्द बनाया। सरकारी आज्ञाओं का उल्लंघन खुले आम होने लगा। इस बीच सन् 1773 ई. में बोस्टन चाय पार्टी की घटना हुई। चाय के आयात पर ब्रिटिश संसद ने कर लगाया था तथा अमेरिका में चाय आपूर्ति का एकाधिकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दिया गया था क्योंकि इसकी आर्थिक स्थिति दयनीय थी। 16 दिसम्बर, 1773 ई. को जब कम्पनी के चाय से लदे हुए तीन जहाज बोस्टन (मैसाच्यूसेट्स) पहुंचे तो वहां के लोगों का एक गिरोह कुलियों का वेश बनाकर उन पर चढ़ गया और उन्होंने चिढ़ उत्पन्न करने वाली ब्रिटिश चाय की पत्तियों को पानी-में फैंक दिया। इस घटना से ब्रिटिश सरकार क्रोधित हो उठी और उसने 1774 ई. में 'मैसाच्यूसेट्स शासन अधिनियम' नामक घोर दमनकारी कानून बनाया। इस कानून से अमेरिकन उपनिवेशों की जनता में रोष का सागर उमड़ पड़ा। वे मैसाच्यूसेट्स की जनता की सहायता के लिये उठ खड़े हुए। इसके साथ ही उपनिवेशों में एक नई क्रान्ति की शुरूआत हो गई।,

21.4 स्वतंत्रता की ओर-

मैसाच्यूसेट्स शासन अधिनियम" से उत्पीड़ित 12 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन 5 सितम्बर, 1774 ई. को फिलाडेलफिया नगर में हुआ। इस सम्मेलन को "महाद्वीप की प्रथम कांग्रेस" (First continental Congress) कहा गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य उपनिवेशों की शोचनीय अवस्था पर विचार करना था तथा जनता के कष्टों को दूर करने के उपाय सुझाना था। इस कांग्रेस ने ब्रिटिश सम्राट के पास दमनकारी कानूनों को रद्द करवाने के लिये एक याचिका (Petition) भेजी तथा "एक महाद्वीपीय परिषद्" (Continental Association) की स्थापना की गई, जिसका मुख्य कार्य यह देखना था कि विदेशी माल का बहिष्कार किया जाय और दमनकारी कानूनों के विरूद्ध भावना तीव्र की जाय। ब्रिटिश सम्राट

जार्ज तृतीय ने इस याचिका को ठुकरा दिया। उपनिवेशों में इसकी घोर प्रतिक्रिया हुई तथा लोगों में विद्रोह की भावना भड़क उठी। इससे 12 मई, 1775 ई. को फिलाडेलफिया में "द्वितीय" महाद्वीपीय कांग्रेस" हुई, जिसमें सभी 13 उपनिवेशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस के अधिवेशन में इस बात पर चिंता प्रकट की गई कि बेंजामिन फेंकलिन द्वारा उपनिवेशों की ओर से इंग्लैण्ड से समझौतों करने के सभी प्रयास असफल हो गये हैं तथा यह प्रस्ताव पेश किया गया कि इंग्लैण्ड से युद्ध किया जाए। जान डिकिन्सन तथा टामस जेफरसन ने मिलकर युद्ध की घोषणा का निम्नलिखित प्रस्ताव रखा था-

"हमारा पक्ष न्यायपूर्ण है, हमारी एकता पूर्ण है, हमारे आन्तरिक साधन बहुत हैं और यदि आवश्यकता हुई तो निस्संदेह-वैदेशिक सहायता भी हमें मिल जायेगी हमारे शत्रुओं ने जो शस्त्र उठाने के लिए हमें विवश किया है, उन्हें हम द्रद्र अपनी स्वतंत्रता के लिये प्रयुक्त करेंगे। हम उनके दास बनकर जीने की अपेक्षा मिटने का संकल्प कर चुके हैं।" इस प्रस्ताव की स्वीकृति के साथ ही कांग्रेस ने जार्ज वाशिंगटन को अमेरिका की नागरिक सेना का प्रधान सेनापति घोषित कर दिया। इस घटनाक्रम के बावजूद इंग्लैण्ड ने अमेरिका के उपनिवेशों के साथ सम्बंध सामान्य बनाने की। दिशा में कोई प्रयास नहीं किया बल्कि सम्राट की ओर से 23 अगस्त, 1775 ई. को यह घोषणा कर दी गई कि उपनिवेशों ने विद्रोह कर दिया है। इंग्लैण्ड की ओर से पूर्णत: निरूतसाहित होकर अन्तत: 4 जुलाई 1776 ई. को अमेरिकी उपनिवेशों ने ब्रिटिश सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा समाप्त कर दी और अमेरिका की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। इस घोषणा में कहा गया-

"हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं कि सभी व्यक्ति समान उत्पन्न हुए हैं, उन्हें स्त्रष्टा ने कुछ ऐसे अधिकार दिये हैं' जो उनसे पृथक नहीं किये जा सकते इनमें जीवन, स्वतंत्रता और प्रसन्नता की खोज सम्मिलित हैं। इन अधिकारों को सुरक्षित करने के लिये ही मनुष्यों में सरकारों की स्थापना होती है और उनको शासन करने के अधिकार भी जनता की अनुमति से प्राप्त होते हैं-जब कभी कोई शासन इन उद्देश्यों का नाशक बन जायें, तब लोगों को अधिकार होता है कि वे उसे बदल दें या समाप्त कर दें और नये शासन की स्थापना करके उसका आधार ऐसे सिद्धान्तों को रखे और उसके अधिकारों का संगठन ऐसे रूप में करें जिनसे उनको अपनी सुरक्षा और सुख-समृद्धि स्थायी रहने की सबसे अधिक आशा हों।"

घोषणा के अंत में कहा गया- "हम सत्य निष्ठा से यह प्रतिज्ञा करते है कि यह उपनिवेश मुक्त और स्वतंत्र राज्य हैं उनके और ब्रिटेन के बीच सभी प्रकार के राजनीतिक सम्बंध पूर्ण रूप से समाप्त हैं और होने भी चाहिये। मुक्त और स्वतंत्र राज्यों के नाते उन्हें कर लगाने, शान्ति स्थापित करने तथा अन्य ऐसी बातें करने का पूर्ण अधिकार है जिन्हें स्वतंत्र राज्य अपने अधिकार के नाते करते हैं। "इस घोषणा ने मानव स्वतंत्रता के नये युग का सूत्रपात किया। यद्यपि इस घोषणा के बाद भी इंग्लैण्ड और उपनिवेशों के बीच करीब 6 वर्ष तक युद्ध चला और अनेक उतार चढ़ाव आते रहे। अन्तत: ब्रिटिश सेनापति कार्नवालिस को 19 अक्टूबर, 1781 ई. को घुटने टेकने पड़े। इसके बावजूद कुछ समय तक सम्राट जार्ज इंग्लैण्ड की पराजय को अस्वीकार करता रहा, किन्तु सन् 1782 ई. में उपनिवेशों पर से अपना अधिकार छोड़

दिया। अटलांटिक सागर के तटवर्ती सभी प्रदेशों को मुक्त कर दिया गया। इंग्लैण्ड में टोरी दल के स्थान पर व्हिग दल ने शासन सम्भाला। इस दल के नेता बहुत पहले से ही सम्राट और संसद की उन कार्यवाहियों का विरोध कर रहे थे जिनके कारण अमेरिकी उपनिवेशवादियों को सशस्त्र विद्रोह करना पड़ा था। अमेरिका के साथ संघर्ष की सरकार की नीति की ब्रिटिश जनता द्वारा तीव्र आलोचना की गई, जिसके कारण प्रधानमंत्री लार्ड नार्थ को त्यागपत्र देना पड़ा और सम्राट जार्ज का कामन्स सभा पर नियंत्रण नहीं रहा। नये प्रधानमंत्री रोकिंघम ने शान्ति वार्ता प्रारम्भ की।

पैरिस संधि, 1783

सन् 1782 ई. के प्रारम्भ में महाद्वीपीय कांग्रेस ने शांति वार्ता के लिये एक आयोग पैरिस भेजा। अमेरिका की ओर से बेंजामिन फैंकलिन, जान एडम्स और जान जे थे। इंग्लैण्ड का प्रतिनिधित्व लार्ड रिचार्ड पोसबार्ल्ड ने किया। 30 नवम्बर, 1782 ई. को इंग्लैण्ड के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किये। सामान्य संधि पर 3 सितम्बर, 1783 को हस्ताक्षर किये गये। इस संधि की शर्तो द्वारा अमेरिका की उत्तरी सीमाएं लगभग वे ही निर्धारित की गई जो इस समय हैं। पश्चिमी सीमा मिसिसिपी नदी और दक्षिणी सीमा फलोरिडा का उत्तरी भाग था जो स्पेन को दिया गया था। पैरिस की संधि में कुछ अन्य प्रावधान भी थे। उदाहरण के लिये, इसने अमेरिकीयों को न्यूफाउण्डलैण्ड के मछलीगाहों में हिस्सा लेने का अधिकार दिया। मिसिसिपी का उद्गम स्थल कनाडा में था। इसलिये यह कहा गया कि इस पर इंग्लैण्ड और अमेरिका द्वारा समान रूप से नौका-चालन किया जाये।

इस 'प्रकार एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अमेरिका का उदय हुआ, जिसने शासन व्यवस्था के क्षेत्र में कतिपय मौलिक सिद्धान्त अपना कर आधुनिक लोकतांत्रिक' व्यवस्था को एक नई दिशा एवं स्थायित्व प्रदान किया।

21.5 संविधान निर्माण प्रक्रिया:-

महाद्विपीय कांग्रेस के प्रथम दो सम्मेलनों ने अमेरिकन उपनिवेशों में स्वतंत्रता के प्रति ललक जागृत कर दी थी। उपनिवेशवासियों ने अब एक स्वतंत्र राष्ट्र के सपने। सजाने प्रारम्भ कर दिये। इसी श्रंखला में 12 जून, 1776 ई. को महाद्वीपीय कांग्रेस के प्रत्येक उपनिवेश से एक-एक सदस्य लेकर एक समिति का गठन किया गया, जिसका प्रमुख कार्य एक ऐसे परिसंघ (confederation) के संविधान पर विचार करना था, जिसके अंतर्गत एकजूट होकर सभी उपनिवेश स्वाधीनता संग्राम का संचालन कर सके और आन्तरिक व्यवस्था कायम कर सके। महाद्वीपीय कांग्रेस ने 17 नवम्बर, 1777 ई. को परिसंघ की स्थापना सम्बंधी धाराओं को स्वीकार कर लिया। सन् 1778 ई. तक डेलवेयर एवं मेरीलैण्ड को छोडकर शेष सभी राज्यों ने इन धाराओं का अनुमोदन कर दिया। डेलवेयर ने सन् 1779 ई. में तथा मेरीलैण्ड ने मार्च, 1781 ई. में उन्हें स्वीकार कर लिया और उसी दिन से ये धारायें लागू हो गई। इसे ही अमेरिका का प्रथम संविधान' 'कहा जाता है। इसी में पहली बार उपनिवेशों के संघ के लिये "संयुक्त राज्य अमेरिका" नाम का उल्लेख हुआ।

इस संविधान के अंतर्गत एक ऐसी केन्द्रीय सरकार की स्थापना की गई, जिसके अधिकार निश्चित और सीमित थे। संघीय शक्तियों को कार्यान्वित करने के लिये कांग्रेस की स्थापना की गई, जिसमें प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधि सम्मिलित किये गये। यह निश्चय किया गया कि प्रत्येक राज्य कम से कम दो और अधिक से अधिक सात प्रतिनिधि भेजे, किन्तु प्रत्येक राज्य को केवल एक ही मत देने का अधिकार (One state, One vote) हो। यह भी व्यवस्था की गई कि किसी प्रस्ताव की स्वीकृति के लिये 13 राज्यों में से 9 का बहुमत आवश्यक होगा। कांग्रेस का रूप एक सदनीय रखा गया।

महाद्वीपीय कांग्रेस की अपेक्षा इस परिसंघ की कांग्रेस के अधिकार निश्चित और स्पष्ट थे, जिनके आधार पर वह सभी राज्यों का सामान्य हित साधन कर सकती थी। इसे विदेशी मामलों की पूरी जिम्मेवारी सौंपी गई। यह कांग्रेस युद्ध की घोषणा कर सकती थी और बाद में शान्ति के लिये संधि कर सकती थी। यह कांग्रेस डाक-तार मुद्रा व नोट और माप-तौल के स्तर की व्यवस्था कर सकती थी। यह विदेशों से संधियां कर सकती थी और वहां पर राजदूत भेज सकती थी तथा उनके राजदूत अमेरिका में रख सकती थी।

कांग्रेस की उपरोक्त शक्तियां बहुत साधारण थी। उसे राज्यों पर कोई कर लगाने का अधिकार नहीं था। कांग्रेस केवल यह निश्चित कर सकती थी कि इसे कुल कितनी धनराशि की आवश्यकता है और प्रत्येक राज्य को कुल कितनी राशि देनी है, परन्तु यह राज्य की इच्छा पर निर्भर था कि कितना धन दे या न दे। कई राज्यों ने बहुत थोड़ा धन कांग्रेस को दिया। इससे उसकी निर्बलता स्पष्ट हो गई। इसकी दूसरी कमजोरी यह थी कि कांग्रेस राज्यों के पारस्परिक वाणिज्य (Inter-state Commerce) नियमित (Regulate) नहीं कर सकती थी। विदेशी व्यापार को भी संघियों के अतिरिक्त किसी और तरीके से इसे नियमित करने का अधिकार नहीं था। राज्यों की इच्छा थी कि वे कांग्रेस के निर्णयों को अपने क्षेत्र में लागू करे या न करे। इस सारी स्थिति का बहुत ही सुन्दर ढंग से विश्लेषण करते हुए प्रो. मनरो ने लिखा है- "यह व्यवस्था अशक्त थी क्योंकि इसमें उन चार बातों का अभाव था जो किसी भी राष्ट्रीय सरकार की शक्ति के लिये आवश्यक है। वे थीं- कर लगाने की शक्ति, उधार लेने की शक्ति, व्यापार का संचालन करने की शक्ति तथा सामूहिक सुरक्षा के लिये संगठित सेना की व्यवस्था की शक्ति।

पहले संविधान तथा उसकी व्यवस्थाओं में कई संरचनात्मक दोष भी थे। इसमें एक संरचनात्मक केन्द्रीय संसद (कांग्रेस) थी। इसमें प्रत्येक राज्य दो से लेकर सात प्रतिनिधि तक भेज सकता था। परन्तु प्रत्येक राज्य का वोट एक ही था। कार्यपालिका की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी। केवलमात्र एक कांग्रेस ही थी। उसकी शक्तियां देखने में तो विस्तृत हैं, किन्तु वास्तव में वे सीमित एवं नियंत्रित थी क्योंकि उसे जो व्यापक कार्य दिये गये, उनकी क्रियांविती के लिये धन की स्वतंत्र व्यवस्था नहीं की गई थी। फिर जब तक युद्ध चलता रहा संघीय कांग्रेस एवं व्यवस्था का पालन होता रहा, परन्तु युद्ध समाप्त होने पर सभी क्षेत्र अपनी सीमाओं में जा घुसे।

संविधान की उपेक्षा होने लगी। विल्सन ने लिखा है "संघीय कांग्रेस कार्यपालिका शक्ति से वंचित होने से विवश और उपेक्षित थी। महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास होने के लिये नौ राज्यों का अनुमोदन प्राप्त करना आवश्यक था और जब स्वतंत्रता संग्राम का भार समाप्त हो गया तो कांग्रेस में राज्यों की दिलचस्पी का प्राय: अन्त-सा हो गया, यहां तक कि कुछ राज्यों की ओर से कांग्रेस के प्रतिनिधि भी नहीं भेजे जाते थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि शासन की केवल एक शक्ति कांग्रेस राज्यों से धन की मांग कर सकती थी। वह उनसे सेना भेजने को कह सकती थी, किन्तु यदि वे न सुनें तो वह असहाय थी। संधि करने की शक्ति कांग्रेस की थी, परन्तु संधि के अनुसार आचरण करने का कार्य राज्यों का था। **विल्सन** ने अंत में कहा- "कांग्रेस ऐसी संस्था थी, जिसके अधिकार तो पर्याप्त विस्तृत थे, परन्तु उसकी शक्तियां शून्य थीं। "कांग्रेस में सम्मिलित संयुक्त राज्य" यह नाम मानो परामर्श देने वाले 'एक बोर्ड का हो।"

21.6 वर्तमान संविधान की रचना-

प्रथम संविधान में अन्तर्निहित दोष जब संघीय व्यवस्था के सफल संचालन में बाधक प्रतीत होने लगे तो उसमें परिवर्तन के स्वर गुंजारित होने लगे। इस दृष्टि हे संविधान की धाराओं में सुधार के कतिपय प्रयास किये गये, किन्तु वे असफल रहे और राज्यों में गृहयुद्ध छिड़ जाने की आशंका पैदा हो गई। ऐसे में अनेक नेता सामने आये, जिन्होंने दृढ़तापूर्वक मांग की कि यदि ये राज्य दुबारा परतंत्रता अराजकता की विभीषिका से बचना चाहते हैं तो हमें एक मजबूत संघीय व्यवस्था के आधीन एकत्रित होना ही पड़ेगा। जार्ज वाशिंगटन के एक शक्तिशाली संघ के विचारों को व्यापक जन समर्थन मिला। फलस्वरूप सन् 1787 ई. में कांग्रेस ने संविधान की धाराओं को संशोधित करने तथा संघ को सुदृढ़ बनाने की दृष्टि से एक सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव पारित किया।

फिलाडेलफिया सम्मेलन-

कांग्रेस द्वारा लिये गये निर्णय के अनुसार 25 मई, 1787) ई. में को फिलाडेलफिया के "इण्डिपेण्डेन्स हॉल" में एक सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता जार्ज वाशिंगटन ने की। रोड द्वीप (Rhode Island) को छोड़कर शेष 12 राज्यों के योग्यतम 55 प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। इनमें जैम्स मेडिसन, जार्ज मेसन, बेन्जामिन फैंकलिन, एमण्ड रेण्डाल्फ, जेम्स बिल्सन, अलैक्जैण्डर हैमिल्टन, रॉबर्ट मोरिस, विलियम सेम्युअल जानसन, जान डिकिन्सन इत्यादि प्रमुख हैं। इस सम्मेलन के संबंध में **टामस जैफरसन** ने कहा है - "यह देवताएं की' सभा थी।"

एक फ्रांसीसी के शब्दों में, "यदि फिलाडेलफिया के सम्मेलन के सभी प्रतिनिधियों को देखा जा तो मैं कहूंगा कि ऐसी सभा पहले कभी नहीं हुई, योरोप में भी नहीं, क्योंकि ये प्रतिनिधि योग्यता, गुण, नि:स्वार्थता, निष्पक्षता एवं देशप्रेम के आधार पर सभी से अधिक मानवीय हैं।" इसी प्रकार प्रसिद्ध विद्वान चार्ल्स बीयर्ड ने लिखा है कि "उन कई ऐतिहासिक सम्मेलनों में, जिन्होंने मानव जाति के क्रियाकलापों में क्रान्ति की है, किसी में भी इतना

राजनीतिक कौशल, व्यवहारिक अनुभव और ठोस तत्व नहीं था। जितना कि फिलाडेलफिया सम्मेलन में था।"

यही कारण था कि सम्मेलन के सम्मुख जितनी भी जटिल समस्याएं प्रस्तुत की गई, उनका प्रतिनिधियों ने अत्यंत विवेक-सम्मत एवं वस्तुपरक समाधान ढूंढ निकाला। पहला विवाद इस बात पर ही उठ खड़ा हुआ कि प्रचलित "संविधान की धाराओं" को ही संशोधित किया जाए, क्योंकि मूलत: यह सम्मेलन "संविधान की 'धाराओं" में सुधार करने के उद्देश्य से ही बुलाया गया था। प्रतिनिधिगण गहन विचार विमर्श के पश्चात् जार्ज वाशिंगटन के इस सुझाव से सहमत हो गये कि एक नया संविधान बनाना अधिक उपयुक्त होगा। अब प्रतिनिधियों को एक ऐसे संविधान का प्रारूप तैयार करना था, जिसमें एक शक्तिशाली केन्द्र की स्थापना हो, किन्तु साथ ही राज्यों की स्वायतता में कम से कम हस्तक्षेप हो। ऐसा संतुलन रखना एक जटिल कार्य था।

इस सम्बंध में सर्वप्रथम वर्जीनिया राज्य की ओर से एक योजना रखी गई, "जिसे" **वर्जिनिया योजना"** (Virginia plan) कहा जाता है। इस योजना में संघीय शासन को अधिक शक्तिशाली बनाने का प्रस्ताव था तथा उसमें ये सुझाव भी थे कि- (1) केंद्र में द्विसदनात्मक व्यवस्था हो, (2) निम्न सदन सब राज्यों का प्रतिनिधि सदन हो और वह जनसंख्या के आधार पर चुना जाये तथा उच्च सदन निम्न सदन द्वारा चुना जायेगा। इन सुझावों का स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि निम्न सदन में जनसंख्या के आधार पर वर्जिनिया जैसे बड़े राज्य को 16 या 17 स्थान मिल जाते, जबकि डेलावेयर तथा रोड द्वीप जैसे छोटे राज्यों को केवल 1-1 स्थान मिलता। इसी प्रकार उच्च सदन में भी बड़े राज्यों को अधिक स्थान मिलते। अत: छोटे राज्यों द्वारा इस योजना का तीव्र विरोध किया गया।

छोटे राज्यों द्वारा उपर्युक्त योजना के विपरित एक अन्य योजना रखी गई, जिसे 'न्यूजर्सी योजना' (New Jersey Plan) कहा जाता है। इसे न्यूजर्सी राज्य के प्रतिनिधि विलियम पेटरसन ने रखा था। इस योजना के अनुसार केन्द्र में एक सदनात्मक व्यवस्था का सुझाव रखा गया, जिसमें सभी छोटे-बड़े राज्यों को एक मत (Vote) का अधिकार हो। इसमें केन्द्र सरकार को कम शक्तियां देने का भी सुझाव था। इस योजना का बड़े राज्यों ने घोर विरोध किया ऐसा प्रतीत होता था कि यह सम्मेलन भंग हो जायेगा, किन्तु जार्ज वाशिंगटन के अथक प्रयासों से सम्मेलन भंग होने से बच गया। जार्ज वाशिंगटन का सम्मेलन पर विशेष प्रभाव था, क्योंकि उनके नेतृत्व, में ही अमेरिका ने युद्ध लड़ा था और विजय प्राप्त की थी। अन्त में कैनेक्टीकट राज्य के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा समझौते के लिये एक योजना रखी गई जिसे लम्बी। बहस के बाद स्वीकार कर लिया गया। इसे एक महान समझौता (Great Compromise) कहा जाता है। इस समझौते के प्रेणता डॉ0 जानसन थे। यह समझौता सब योजनाओ का सार था। इस समझौते के अनुसार केन्द्र में द्विसदनात्मक व्यवस्था की गई। निम्न सदन का नाम प्रतिनिधि सदन (House of Representative) रखा गया जो राज्यों का प्रतिनिधित्व करेगा और जिसमें जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधि चुने जायेंगे। उच्च सदन का नाम सीनेट रखा गया जिसमें प्रत्येक छोटे व बड़े राज्य को समान प्रतिनिधित्व देने की व्यवस्था की गई। इनके अलावा भी जो-जो मुद्दे विवाद के थे, जैसे संघीय सरकार की शक्तियां क्या हो,

राज्यों के निजी संविधान और संघीय संविधान में क्या संबंध हो, आदि। इन्हें भी सुलझा दिया गया। 26 जुलाई, 1787 ई. तक संविधान के प्रमुख सिद्धान्त निर्धारित कर दिये गये और भावी संविधान के प्रलेख को 26 प्रस्तावों के रूप में स्वीकार कर लिया गया। 8 सितम्बर, 1787 ई. को इस सम्मेलन में अपनाये गये सभी प्रस्तावों को संविधान का रूप देने के लिये राज्यपाल मौपिस की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। 15 सितम्बर, 1787 ई: तक संविधान की स्वीकृति दे दी गई और 17 सितम्बर, 1787 ई. को 55 में से 39 प्रतिनिधियों ने उस पर हस्ताक्षर कर दिये और इसके साथ ही सम्मेलन स्थगित हो गया।

21.7 संविधान का अनुमोदन

नये संविधान के प्रलेख में एक प्रावधान रखा गया था कि तभी लागू होगा जब 13 में से कम से कम 9 राज्य इसे स्वीकार कर लेंगे। यद्यपि राज्यों के अधिकांश प्रतिनिधि उस पर हस्ताक्षर कर चुके थे, परन्तु जब उसे राज्यों की स्वीकृति के लिये प्रस्तुत किया गया तो अनेक राज्य इसमें आना कानी करने लगे और तरह-तरह के खतरों की सम्भावनाएँ प्रकट करने लगे। संघीय प्रणाली के समर्थकों और विरोधियों के बीच एक जोरदार बहस छिड़ गई। हैमिल्टन तथा जेम्स मेडिस जहां संघीय प्रणाली की वकालात कर रहे थे, वहाँ पैट्रिक हेनरी, रिचर्ड हेनरी ली, सेम्यूअलसन एडम्स, जार्ज मेसन तथा एल० ब्रिजगेरी इत्यादि ने संघ प्रणाली का घोर विरोध करना शुरू कर दिया। उनके द्वारा यह भी आपत्ति उठायी गई कि इस संविधान में कोई अधिकार-पत्र (bill of Rights) नहीं है। इस पर जब संघीय प्रणाली के समर्थकों ने यह घोषणा की कि संविधान लागू होने पर पहला काम संविधान में संशोधन करके अधिकारों की व्यवस्था की जायेगी, तब कुछ राज्य संविधान के 'अनुमोदन के लिए तैयार हुए। 2 जुलाई, 1788 ई. तक 13 में से 9 राज्यों ने नये संविधान का अनुमोदन कर दिया। अत: उसे लाग करने की तैयारियां आरम्भ कर दी गई। न्यूयार्क, को संयुक्त राज्य उामेरिका की अस्थायी राजधानी बनाया गया। 2 अप्रैल, 1789 ई. को प्रतिनिधि सभा का गठन किया गया। 5 अप्रैल, 1789 ई. को सीनेट का भी 'गठन हो गया। 4 मार्च, 1789 ई. को न्यूयार्क के फैडरल हॉल में राष्ट्रपति के चुनाव के लिये निर्वाचक मण्डल की एक बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से जार्ज वाशिंगटन राष्ट्रपति तथा बहुमत से जार्ज एडम्स उपराष्ट्रपति चुने गये। 30 अप्रैल, 1789 ई. को राष्ट्रपति वाशिंगटन ने अपना पद सम्भाला। इसके बाद सरकार के अन्य विभागों के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। 29 मई, 1790 ई. तक सभी 13 राज्यों ने संविधान का अनुमोदन कर दिया। तब से अब तक इसी संविधान के अंतर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका का शासन संचालित हो रहा है। इस संविधान में अब तक कुल 27 संशोधन किये गये हैं। इनमें से पहले दस संशोधन संविधान लागू होने के तुरंत बाद हुए, जिनके अधिकार-पत्र को संविधान का अंग बनाया गया

21.8 अभ्यास के प्रश्न

1. अमेरिका के संविधान के निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन कीजिये।
2. अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता की घोषणा पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

3. फिलाडेलफिया सम्मेलन का वर्णन कीजिये।

21.9 सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जार्ज बानफ्रोस्ट - **हिस्ट्री ऑफ द यूनाइटेड स्टेटस**
2. वी. एस. माथुर - **अमेरिका का इतिहास**
3. बनारसी प्रसाद सक्सेना - **अमेरिका का इतिहास**

MAHI-01/ISBN13/978-81-8496-260-4